# द्वितीय अध्याय

# आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी की समस्याएँ

:द्वितीय अध्याय :

# ``आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी की समस्याएँ``

**विषय प्रवेश :**

आधुनिक युग में मानव ने विज्ञान के द्वारा नये -नये अविष्कारों की खोज कर प्रगति के द्वार खोलते हुए जीवन की जटिलताओं को भी जन्म दिया है। परिणामत: आज मानव जीवन बहुत-सी समस्याओं से घिरा हुआ है।

आज मनुष्य की प्रवृत्ति भौतिक सुख की ओर अधिक झुकी हुई दिखाई देती है। इस प्रवृत्ति के कारण मनुष्य भौतिक सुख पाने हेतु हर समय कार्यरत रहने लगा है। नये-नये अविष्कारों के द्वारा वह अपना जीवन अधिक से अधिक सुखी बनाना चाहता है। उसकी सुखी जीवन की कल्पनाओं का कोई अंत नहीं होता, अपनी कल्पनाओं को वास्तव में लाने हेतु वह प्रयत्न करता रहता है। इस भागदौड़ में कही-कही उसे अपना कुछ-न-कुछ खोना भी पड़ता है। कल्पनाओं को वास्तव रूप देते समय, अपने सपने दूर करते समय जो-जो बाधाएँ, रूकावटे उसके सामने उपस्थित होती है, वे ही समस्याएँ हैं। समस्या याने वह उलझनात्मक कठिन स्थिति जो मनुष्य के कार्य करते समय उसके सामने उपस्थित होती है।

समस्या इस छोटे शब्द ने विशाल मानव जाति को हर तरह से अपनी परिधि में बांध रखा है। मानव जीवन का ऐसा कोई भी हिस्सा नहीं है, जिसे किसी-न-किसी समस्या ने घेर न रखा हो। जिंदगी में हर दिन मानव के सामने जो भी समस्याएँ आती हैं, उन्हें समाप्त करने में, सुलझाने में वह दिन-रात व्यस्त रहता है। कभी-कभी इन समस्याओं को सुलझाते समय उसे अपनी आत्माहुति भी देनी पड़ती है। मानव की इन समस्याओं ने साहित्य को भी अपनी ओर आकृष्ठ किया है।

आधुनिक युग में मानव भौतिक सुखों की ओर आकर्षित हो चुका है, ऐसी स्थिति में समस्यारहित जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मनुष्य अपनी जितनी भी उन्नति करना चाहता है, उतनी ही उसके जीवन में समस्याएँ बढ़ जाती हैं। सही अर्थों में समस्या याने जीवन यापन में मनुष्य के सामने उपस्थित चुनौती है। प्रगति की ओर अग्रेसर मनुष्य को इन समस्यारूपी चुनौतियों का सामना करके

आगे बढ़ना पड़ता है। जटिल-से-जटिल समस्या से झूझने पर ही मानव वास्तव में जीवन का अर्थ जानता है। यही समस्याएँ कभी-कभी मनुष्य की प्रेरक शक्ति बन जाती हैं, तो कभी कुछ समस्याएँ मानव जाति के लिए कष्टप्रद हो जाती हैं।

समस्या आज एक कठिन उलझन के सिवा कुछ नहीं है। मनुष्य सामने आनेवाली समस्याओं का समाधान खोजने का कार्य कर रहा है, परंतु वह उसमें इतना उलझ गया है कि समस्या का सही समाधान नहीं कर पा रहा है। वह बार-बार उसी में उलझ रहा है। अत: अधोलिखित पंक्ति में हम समस्या शब्द का अर्थ परिभाषा, व्याप्ति देखेंगे।

संस्कृत भाषा के `सम् `उपसर्ग तथा `अस` धातु के संयोग से `समस्या` शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। `सम` का अर्थ है --- `एकत्र` तथा `अस` का अर्थ है ----`फेंकना` या `रखना` अर्थात एक रखना या करना।

**समस्या : विभिन्न अर्थ एवं परिभाषा :-**

हिंदी के विभिन्न कोशकारों ने जिस रूप में समस्या शब्द को परिभाषित किया है तथा `समस्या` शब्द के विभिन्न अर्थ प्रस्तुत किए हैं उनका संक्षिप्त अवलोकन दृष्टव्य है-

**1. हिंदी विश्वकोश के अनुसार :-**

``समसन उक्त स `क्षेपण` सम् असण्यत् ।

1. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

पयार्य - समासार्था, समास्यार्था, समाप्तार्थी।

2. संघटन।
3. मिश्रण, मिलाने की क्रिया।
4. कठिन अवसर या प्रसंग।`` [1]

तात्पर्य साहित्य में किसी की काव्य ज्ञान की आजमाईष के लिए काव्य तथा श्लोक अथवा छंद का अंतिम

पद उसके सामने रखा जाता था और उस व्यक्ति को उसके आधार पर उस अंतिम पद को पूर्ण करना होता था। अर्थात वह चुनौती उसके सामने रखी समस्या ही होती थी। इसके साथ ही `समस्या` इस शब्द के विभिन्न अर्थ भी दिए हैं।

**2. हिंदी शब्दसागर के अनुसार :-**

``1. संघटन।

2. मिलने की क्रिया, मिश्रण।

3. किसी श्लोक या छंद का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

4. कठिन अवसर या प्रसंग। कठिनाई। जैसे-इस समस्या तो उनके सामने कन्या के विवाह की एक बड़ी समस्या उपस्थि है।``[2] प्रस्तुत परिभाषा में ऊपर निर्दिष्ट परिभाषा का ही अर्थ बोध होता है। इसके साथ ही वर्तमान स्थिति में समस्या का जिस रूप में अर्थ लिया जाता है उसे भी उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है।

**3. मानक हिंदी कोश के अनुसार :-**

``1. मिलने की क्रिया या भाव। मिलन।

2. मिश्रण। संघटन।

3. उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। कठिन या बिकट प्रसंग (प्रॉब्लेम)

4. छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य रचना के कौशल की परीक्षा करने के लिए उस उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधारपर अथवा उसके अनुरूप छंद या श्लोक प्रस्तुत करें।``[3]

प्रस्तुत परिभाषा में ऊपर निर्दिष्टित परिभाषा का ही अर्थ निहित है। इस अर्थ के साथ ही इस परिभाषा में

एक ऐसे उलझनवाले विचार का जिक्र किया है जिसका समाधान सहज नहीं होता हो तथा समाधान होना कठिन बात हो।

**4. नालंदा विशाल शब्दसागर के अनुसार :-**

``1. वही उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसंग। प्रॉब्लेम।

2. संघटन।

3. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सम्मुख रखा जाता है।``[4]

प्रस्तुत परिभाषा से ऊपर निर्दिष्टित अर्थ ही अभिप्रेत होता है।

**5. भाषा-शब्द कोश के अनुसार :-**

``कठिन या जटिल प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अंतिमांश जिसके आधार पर पूर्व पद्य रचा जाता है, संघटन, मिश्रण, मिलने का भाव या क्रिया।``[5]

उपरोक्त परिभाषाओं मे यह बात स्पष्ट होती है कि `समस्या` शब्द किसी पद या काव्य का वह अंश है, जिसके सहारे पूर्ण पद की रचना की जाती है। परंतु आजकल व्यवहार में आनेवाली कोई भी कठिन या उलझन पैदा करनेवाली स्थिति को समस्या के नाम से अभिहित किया जाता है। अत: हम कह सकते हैं -

``मनुष्य को अपने जीवन यापन के समय जिस उलझनात्मक प्रसंग या कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वे कठिनाइयाँ उसके सामने एक चुनौती के रूप में खड़ी होती है, उन्हीं चुनौतियों को हम समस्या कह सकते हैं।``

**नारी समस्या : स्वरूप :-**

वैदिक काल में नारी को पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे। उसकी स्थिति वैदिक काल में अच्छी थी। उसका सम्मान किया जाता था और जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष नारी का सहकार्य प्राप्त करते थे। सौ. सुमन पाटे के अनुसार - ``जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष नारी की सहायता लेते थे और बौद्धिक,

शारीरिक, नैतिक इन सभी दृष्टियों से समर्थ समझी जाती थी। और इसे सम्मान दिया जाता था।``[6] अत: स्पष्ट है कि वैदिक काल में नारी की स्थिति आज की अपेक्षा अच्छी थी। उसे एक प्रकार का विशेष अधिकार प्राप्त था और वह सही अर्थ में पुरूष की सहचारिणी थी।

वैदिक काल के उपरांत नारियों का जीवन अनेक समस्याओं से पीड़ित हो गया। नारी की सबसे प्रथम और महत्त्वपूर्ण समस्या यही है कि उसे पुरूषों की अपेक्षा दुर्बल समझकर उसे समाज में गौण स्थान पर रख दिया है। परंतु नारी ने आज प्रत्येक क्षेत्र में योग्यता सिद्ध करके पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करना आरंभ किया है। आज शिक्षा, खेलकुद, राजनीति, विज्ञान, समाज सेवा आदि के साथ पुरूषों की जागिर समझे जानेवाली `कुस्ती` जैसे खेल में भी नारी अपनी योग्यता सिद्ध कर चुकी है। इतना कुछ करने के बाद भी नारी को पुरुषों की अपेक्षा प्रत्येक क्षेत्र में कम ही आंका जाता है। ऐसा समझा जाता है कि शारीरिक बल की तुलना में नारी पुरूषों की अपेक्षा निर्बल है और यह सही भी है परंतु कुछ मामलों में नारी पुरूषों की अपेक्षा सबल सिद्ध हो चुकी है। धर्मपाल के अनुसार - ``आधुनिक शोध की अवधारणा यह है कि `नारी` पुरूषों की अपेक्षा कही अधिक शक्तिसंपन्न है। इसका एक कारण तो यह है कि नारी में एक्स क्रोमोसोम (गुणसूत्र) अधिक मात्रा में रहते हैं जिनके कारण वह पोलिओ, वर्गांधता और वंशानुगत रोगों से प्रभावित नहीं होती। दूसरा कारण यह बताया जाता है कि नारी के रक्त में गामाल्लोबीन की अधिकता के कारण घातक रोगों के कीटानुओं से जूझने की अद्भूत क्षमता रहती है। तीसरा कारण एस्ट्रोजन तत्व की प्रधानता का होना है जिसके निमित्त नारी गर्भधारण --- और प्रसव के दौरान अपनी खोई शक्ति को कुछ ही अंतराल के पश्चात् फिर से अर्जित करने के योग्य भी हो जाती है। इस प्रकार नारी को निर्बल या अबला कहा जाना अनुचित है।``[7] तात्पर्य यह कि पुरूषों में `एक्स` और `वाय` क्रोमोसोन (गुणसूत्र) होते हैं, नारी में `एक्स` और `एक्स` क्रोमोसोम (गुणसूत्र) होते हैं अत: नारी में `एक्स` क्रोमोसोम की अधिकता के कारण पुरूषों की अपेक्षा वह शक्तिसंपन्न है। उसी प्रकार गामाग्लोबीन की अधिकता के कारण वह पुरूषों की तरह घातक रोगों से प्रभावित नहीं होती। अत: स्पष्ट है कि वैज्ञानिक दृष्टि से नारी पुरूषों की अपेक्षा सबल है। फिर भी नारी को अबला समझकर पुरूषों ने हर प्रकार से उस पर अत्याचार किये हैं। अपना स्वामीत्व कायम रखने के लिए पुरूषों ने नारी को अनेक सामाजिक और धार्मिक बंधनों में जकड़ दिया है। इसका परिणाम यह हुआ कि नारी को अपने अंदर की इस शक्ति को पहचानने का पुरूषों ने अवसर नहीं दिया और नारी खुद अपने-आप ही पुरूषों की अपेक्षा शक्तिसंपन्न होते हुए भी

दुर्बल समझने लगी और पुरूषों के दबाए जने पर दबती चली गई।

नारी को जन्म से ही प्राप्त नैसर्गिक `नारीत्व` ही उसके साथ किए जानेवाले अन्यायकारक व्यवहार के लिए मूल समझा जाता है। उसके नारीत्व या स्त्रीत्व के कारण जिन विविध तथा विचित्र आवस्थाओं को उसे झेलना पड़ता है। उसी में से ही नारी समस्या का जन्म होता है। नारी की वर्तमान स्थिति अत्यंत शोचनीय है। विदेशों में कुछ विकसित राष्ट्रों की नारी अपने अधिकार के बारे में सजग हैं। वह अपने बुद्धि के बलबुते पर जीवन में बहुत कुछ साध्य कर सकती हैं, फिर भी वहां मातृत्व का भार लेते समय आनेवाली, पति के स्वच्छंद वृत्ति के कारण उसके साथ जीवन बिताते समय आनेवाली समस्याएँ और बलात्कार, पारिवारिक पीड़ा, पुरूषों की अपेक्षा कम आंकना आदि समस्याओं का उसे सामना करना पड़ता है। पति द्वारा प्राप्त पीड़ा, मानसिक बलात्कार, बलात्कार, तलाक, वेश्यावृत्ति और कुँवारा मातृत्व जैसी समस्याएँ सभी प्रगत देशों में पाई जाती है।

भारतीय समाज में उच्च वर्गीय नारी में भी इन समस्याओं के आसार होता दिखाई देते हैं। गरीब और अशिक्षित नारी की समस्या का रुप तो बहुत ही भीषण है। निर्धनता के कारण आज स्त्री के जिंदा रहने की भी समस्या निर्माण होती है। भारतीय समाज में अभी भी परिवार, जाति, गाँव, समाज आदि को श्रेष्ठ स्थान दिया जाता है और व्यक्ति को गौण स्थान दिया जाता है। नारी का पुरूष, परिवार तथा समाज के प्रति व्यवहार किस प्रकार होना चाहिए उसका निश्चय भी पुरूष ही करते हैं। नारी का विवाह होना समाज में अनिवार्य समझा जाता है। अविवाहित नारी को समाज की आलोचनाओं का शिकार होना पड़ता है। घर की चार दीवारी में ही उसका कार्यक्षेत्र होता है बल्कि यह कहना उचित होगा कि उसका विश्व ही इन चार दीवारियों में बंद होता है। समाज के बनाए इन नियमों का अगर नारी विरोध करें तो उसे अविरत संघर्षों का सामना करना पड़ता है। परिवार में नारी से यह आशा की जाती है कि वह लड़के को ही जन्म दें लड़की को नहीं।जिस नारी के लड़का नहीं होता उन्हें परिवार तथा समाज में भी अपमानित तथा प्रताड़ित किया जाता है। लड़का हो इस आशा से उस पर बार-बार मातृत्व का बोझ ड़ाला जाता है। परिणामत: उसका स्वास्थ बिघड़ जाता है फिर भी पति या परिवारवाले बेटा पाने की इच्छा से उसे माँ होने के लिए प्रेरित करते हैं। समाज द्वारा निर्मित इन नियमों का नारी द्वारा उल्लंघन होने पर समाज उसे दोषी समझकर प्रताड़ित करता है। धर्मपाल के अनुसार - ``नारी द्वारा किए गए किसी छोटे से उल्लंघन को समाज अपने नियमों पर एक बहुत बड़ा कुठाराघात मानता आया है। प्राचीन काल में ही नहीं परवर्ती समयों में भी पुरूष प्रधान

समाज ने सदैव नारी को कड़े से कड़ा दंड देकर ही आत्मसुख प्राप्त किया है।``[8] इस बात से स्पष्ट है कि पुरूषों द्वारा निर्दिष्ट जिन नियमों का नारी ने उल्लंघन किया या करना चाहा, पुरुषों ने उसे दंडित किया और अपना प्रभुत्व समाज में कायम रखा।

भारतीय समाज में नारी को भोगदासी ही समझा जाता है। कहने मात्र में वह पुरूष की अर्धांगिनी होती है परंतु वास्तव में उसे पुरूषों की कामवासना तृप्त करने का साधन मात्र समझा जाता है। पुरुष जब चाहे, कभी प्यार से तो कभी बलात्कार से उसे भोगकर अपनी कामवासना तृप्त करता है। परिवार के सभी कार्य नारी को ही करने पड़ते हैं। नौकरी करनेवाली नारी को तो नौकरी के साथ-साथ परिवार का कार्यभार भी संभालना पड़ता है। पति की तरह वह भी धन कमाकर लाती है परंतु उसके द्वारा प्राप्त किए धन पर उसका अपना कोई अधिकार नहीं होता। उसे परिवार की उन्नति के लिए इस्तेमाल किया जाता है। निर्धन तथा गरीब नारी को तो निर्धनता के कारण अनेक यातनाओं को सहना पड़ता है। उसे परिवार का पूर्ण रूप से कार्यभार संभालना पड़ता है। घर का कामकाज करके कही अन्यत्र मेहनत मजदूरी करनी पड़ती है। जल भरना, लकड़ियाँ लाना, आटा पिसना, खाना बनाना आदि शारीरिक कष्ट देनेवाले कार्य उसे करने पड़ते हैं। उस पर पति अगर शराबी हो तो अकारण उसके द्वारा दी जानेवाली मार तथा यातनाओं को भी उसे सहना पड़ता है। मेहनत-मजदूरी करके जो धन कमाया जाता है वह शराब में उड़ाता है परंतु भारतीय नारी अपने बच्चे तथा परिवार के लिए उसके सभी अत्याचारों को चूपचाप सहती रहती है। कई बार नारी को सौतन तथा पति की रखैल के कारण भी पति के अत्याचारों को सहना पड़ता है। पति के अतिरिक्त ससुराल के अन्य सदस्य भी उसे हर प्रकार से पीड़ित करते रहते हैं। ऐसी अवस्था में मैके का सहारा न मिलने पर उसका जीवन चारो ओर से असहाय व अंधकारमय बन जाता है। डॉ. सुधा कालदाते के अनुसार-```विवाह का मतलब नारी की मैके से मृत्यु` ऐसी जहाँ वृत्ति होती है वहाँ ससुराल में पीड़ा और मैके में सहारा नहीं इसीलिए नारी परित्यक्ता, वेश्या बनती हैं या असहाय, अकेली जीवन बिताती है।``[9] तात्पर्य, भारतीय समाज में विवाह के बाद स्त्री का मैके से संबंध टूट जाता है। अत: ससुराल में अनंत यातनाएँ देने पर भी उसे चूपचाप उन्हें सहना पड़ता है ताकि ससुरालवालों से विद्रोह करके अगर वह मैके चली जाना चाहे तो उसे मैकेवाले सहारा नहीं देते अत: वह अपना जीवन व्यतित करने के लिए वेश्यावृत्ति जैसे कुप्रथाओं का सहारा लेती है।

शिक्षित और नौकरी पेक्षा नारी को घर के बाहर समाज में विचरण करते समय अपने

शील को संभालना पड़ता है। पुरूषों की गलतियों के कारण अगर उसका शील भ्रष्ट हो जाय तो भी पुरूषों को सजा देने की बजाय नारी को ही दोष दिया जाता है। अपनी इज्जत की रक्षा न करने के कारण समाज नारी को ही प्रताड़ित करता है। वास्तव में बलात्कारित नारी का कोई दोष नहीं होता, उसकी तो शिकार की जाती है। परंतु समाज की दृष्टि में नारी ही दोषी होती हैं। इस परंपरागत सामाजिक वृत्ति के कारण इस प्रकार की घटनाएँ घटित होती हैं। ऐसी वृत्ति को बदलना अनिवार्य है। उसे बदलने के लिए समय लगता हे। तब तक तो वर्तमान परिस्थितियों में युवा व सुंदर नारी को इस समस्या का सामना करना होगा। इस प्रकार नारी को समाज की झूठी मान्यताओं के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं का सामना करते-करते नारी इन समस्याओं में इतनी घिर चुकी है कि वह खुद एक समस्या बनकर रह गई है।

## समाजविज्ञान के अनुसार नारी की समस्याएँ :-

भारतीय सामाजिक समस्या` में सुमन पाटे जी ने नारी के सामने आनेवाली निम्नलिखित समस्याओं का उल्लेख किया है -

1. बाल विवाह।
2. विधवा विवाह बंदी।
3. अन्तर्जातीय विवाह बंदी।
4. जरठ कुमारी विवाह बंदी।
5. पर्दा पद्धति।
6. बहुपत्नी विवाह।
7. कन्यावध प्रथा।
8. दहेज प्रथा।
9. सती प्रथा।
10. देवदासी प्रथा।
11. वेश्यावृति।

इन सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ नारी को पारिवारिक समस्याएँ, जैसे-पति की निर्धनता, पति की व्यसनाधीनता, परिवार विघटन, आर्थिक पराधीनता, सास ससूर व देवर-ननद द्वारा दी जानेवाली पीड़ा आदि समस्याओं के साथ-साथ कुरूपता, आर्थिक पराधीनता, नौकरी, स्वच्छंद वृत्ति, काम तृप्ति का अभाव, बांझपन आदि व्यक्तिगत समस्याओं का भी सामना करना पड़ता हैं।

प्रस्तुत सभी समस्याओं का सामना करते-करते नारी आज विकास के प्रगति पथ पर अग्रेसर रहने का प्रयास कर रही हैं। नारी ने पुरूषों की तरह हर क्षेत्र में अपनी जाति को गौरव प्रदान कर दिया है। शिक्षा क्षेत्र के साथ-साथ खेलकुद, राजनीति में ही नहीं तो सबसे कठिन समझे जानेवाले समाज कार्य में भी नारी ने अपना योगदान दिया है और आज भी दे रही है। राजनीति में तो अपनी भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा जी ने प्रधानमंत्री के रूप में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उनके बारे में कहा जाता था - ``आज के भारत में कौन-सा अकेला व्यक्ति है जिसे कश्मिर से कन्याकुमारी तक लोग जानते हैं और पहचानते हैं। जिसके चट्टानी इरादों, और विजय शक्ति को लख भारत-पाक युद्ध के उपरांत कोई अनायास `दुर्गा का अवतार` कह बैठा था। जिसे मरदों के भरे-पूरे कैबिनेट में कभी `अकेली मरद` कहा गया था।``[10] स्पष्ट है कि नारी कमजोर या अबला नहीं होती बल्कि वे पुरुषों से भी अधिक शक्तिसंपन्न व बुद्धिमान होती हैं। परंतु पुरुषों ने उसे कभी अपने हुनर दिखाने का अवसर ही नहीं दिया। उसे देवी की तरह पूज्य तो मान लिया परंतु चारदीवारी से बाहर नहीं आने दिया। परिणामत: नारी भी अपने- आप को दुर्बल समझने लगी। नारी की इसी प्रवृत्ति के कारण वह उत्पन्न समस्याओं का विरोध व समाधान करने की अपेक्षा चूपचाप अत्याचारों को सहती है।

समाजविज्ञान के साथ-साथ साहित्य की तमाम विधाओं को भी नारी की समस्याओं ने प्रभावित किया है, अत: आज साहित्य के उपन्यास, कहानी, काव्य आदि विधाओं में बड़े पैमाने पर इन समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। दुनियाँ की सभी भाषाओं मे नारी की इन समस्याओं का चित्रण करके उनका समाधान करने का प्रयास किया है। इन समस्याओं पर कुछ कहानियों के माध्यम से `पाक्षिक सारिका` ने भी दृष्टिपात करेन का सफल प्रयास किया है। उन समस्याओं के बारे में विस्तृत जानकारी देने का मैंने प्रयास किया है। कहानियों में चित्रित इन समस्याओं को निम्नलिखित विभागों में विभाजित किया है।

## कहानियों में चित्रित समस्या :-

विश्व की सभी साहित्यिक विधाओं में नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण किया जा चूका है। अभी भी हो रहा है। उपन्यास, कहानी, महाकाव्य, काव्य, एकांकी, नाटक के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी नारी की समस्याओं पर प्रकाश डालने की कोशिश की जा रही है। `पाक्षिक सारिका` में चित्रित कहानियों के `देह व्यापार-कथा-विशेषांक`, `नारी यातना-कथा विशेषांक`, `जब्तशुदा कहानियाँ-विशेषांक ` में नारी जीवन की तमाम समस्याओं का चित्रण किया है। इन्हीं समस्याओं का विस्तृत विवेचन दृष्टव्य है।

### क. सामाजिक समस्या :-

नारी की सामाजिक समस्या से तात्पर्य यह कि नारी के जीवन में आनेवाली वह समस्याएँ जो सामाजिक नियम, रूढ़ी व परंपरागत मान्यताओं के कारण उत्पन्न होती हैं। इन समस्याओं से पूरा समाज प्रभावित होता है। राम आहूजा के अनुसार - ```सामाजिक समस्या` शब्द उसी `विषय` के लिए उपयोग किया जाता है जिसे सामाजिक आचार शास्त्र --और समाज प्रतिकुल समझता है।``[11] तात्पर्य यह कि सामाजिक समस्या वहीं है जिसका समाज जीवन पर विपरित परिणाम होता है तथा समाज की उन्नति के लिए वे समस्या बाधा पहुँचाती हैं। सामाजिक आचारशास्त्र द्वारा समाज के लिए प्रतिकूल समझी जानेवाली स्थितियाँ सामाजिक समस्या हैं। इन समस्याओं के अन्तर्गत आनेवाली नारी समस्याओं का विवरण दृष्टव्य है।

### 1. सामाजिक उपेक्षा :-

अत्याचार के खिलाफ अगर कोई नारी आवाज उठाती है, अपने हक के लिए लड़ती है और हक़ पाने के लिए संघर्ष करते समय उसके हाथों अनुचित कृत्य हो जाए तो पुरूष प्रधान समाज उसे समाज से बहिष्कृत कर देता है या फिर झूठे केस बनाकर उसे कानून के हवाले करता है तथा उसे लंबी सजा हो एसी कानून से मांग करता है। नारी एक कोमल स्वभाव की जीव है,वह प्रेम की मूर्ति जब किसी को अपना समझने लगती है, अपना सबकुछ उस पर न्यौछावर कर देती है। पुरूष ने उसे कभी अपने स्वार्थ सिद्धि के परे समझा ही नहीं। स्वार्थपूर्ति के बाद उसे अपने से अलग किया। ऐसे वक्त जब नारी को अपनाने से इंकार करता है तो नारी अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। वह पागल होती है। कुंठित होती

है। ऐसे में नारी आत्महत्या भी करती है। या फिर दुर्गा बनकर बरबाद करनेवाले से बदला भी लेती है। यह बात समाज को नहीं जचती अत: समाज उसे बहिष्कृत कर देता है या फिर कानूनी तौर पर उसे सजा देने की पुरजोर कोशिश करता है।

हरमन चौहान द्वारा लिखी कहानी `छाग` की नायिका गलकू के साथ समाज ऐसा ही व्यवहार करता है। गलकू गोठिया नाम के आदमी से प्यार कती है, वह अपना सबकुछ गोठिया को सौंप देती है। नतिजन वह तीन बार पेट से रहती है। तीन बार पेट गिराती है। लाख बिनती करने पर भी गोठिया उससे शादी करेन के लिए तथा घर बिठाने के लिए तैयार नहीं होता। वास्तव में गोठिया स्वार्थी है। गलकू तो उससे सच्चे मन से चाहती है परंतु गोठिया उसे सिर्फ अपनी काम-वासना तृप्त करने का साधन समझता है, भोगता रहता है। गलकू के लाख समझाने पर भी गोठिया नहीं मानता तब तैश में आकर धोखे से गलकू उसका लिंग काट देती है। लिंग के काट देने पर वह आत्महत्या करता है। इस बात को लेकर गांव के वही लोग जिन्होंने कभी गलकू और उसकी माँ के साथ मुँह काला किया था, कुकर्म किया था, गलकू को गोठिया के खून के इल्जाम में फंसाकर पुलिस के हवाले करते हैं। झूठे गवाह जोड़कर उसे सजा दिलवाने की कोशिश करते हैं, खुद मुजरिम हैं और गलकू पर खून का झूठा आरोप लगाते हैं। तब गवाह के कटहरे में खड़ी गलकू इन गवाहों को झूठा साबित करती हुई कहती है - ``जस्साब, गवाह नंबर एक, वो ऽऽ जो सामने बैठा है, धंधे से बनिया है जात से भले ही ऊँचा महाजन होगा, लेकिन हरकतों में बहुत कमिना है। मैं छोटी थी, तब मुझे अपनी दूकान में बुलाकर मीठी-मीठी गोलियाँ देता था और बदले में मेरी छाती की गोलाइयाँ नापता था।``[12] स्पष्ट है कि लेखक ने यहाँ वासना के ऐसे पुजारी का चित्र खिंचा है जो वासनांध होकर एक अबोध बच्ची को मीठी गोलियों का लालच देकर उसके साथ वासना का खेल खेलता है। बाद में खुद को शरीफ समझकर उसके विरोध में गवाही देने के लिए खड़ा होता है।

गलकू जब छोटी थी तो उसके पिता को मां के खिलाफ भड़काकर समाज में रहनेवाले इन्हीं इज्जतदार लोगोंने पहले तो उसकी नाक कटवाई बाद में वेश्यावृत्ति का इल्जाम लगाकर उसे घर से बाहर निकाल दिया। गलकू अपने बयान में आगे कहती है - ``गवाह नंबर पांच, उस भड़वे को देखो जो दिनभर निठल्ला रहता है। मेरी मां का दलाल बनकर उससे धंधा करवाता था। मेरे बाप को भड़काकर पहले मेरी मां की नाक कटवाई और फिर घर से बाहर निकलवा दिया। दर-दर की हम ठोकरे खाते रहें। कभी इस गांव तो कभी उस गांव ! हर जगह मुझे `नकटी की बेटी` कहा जाता था।``[13] यहाँ लेखक ने इस बात की

ओर संकेत किया है कि पुरूष ने औरत का अपने स्वार्थ के लिए इस्तमाल किया । जब अपने स्वार्थ की पूर्ति हो गई और औरत ने अंजाने में उसका विरोध करने की कोशिश की तो उसे कलंक लगाकर इस काबिल भी नहीं छोड़ा कि वह समाज में सर उठाकर जी सके। साथ ही उस बच्ची की मनोदशा की ओर संकेत किया है जिसे अपने मां के व्यंग्य को लेकर चिढ़ाया जाता है। गलकू बड़ी होने पर जब इनका विरोध करती है तो समाज उसे भी झूठे इल्जाम में फंसाकर कानून के हवाले करता है। इस बात से स्पष्ट होता है कि समाज में पुरूष के खिलाफ जानेवाली औरत को पुरूषों ने सहन नहीं किया। अपने हक्क व मान-सम्मान के लिए लड़नेवाली औरत को हर तरह से दंडित किया। यह नारी के सामने आनेवाली आम समस्या है। जिसका समाधान करने के लिए गलकू जैसी युवतियाँ आज भी समाज और कानून से लड़ती हैं।

**2. नैतिकता :-**

भारतीय संस्कृति पुरुष प्रधान संस्कृति है यहाँ नारी को ही नैतिकता के पाठ पढ़ाए जाते हैं और उसी से यह आशा की जाती है कि समाज द्वारा तैयार किए किसी भी नियम का उल्लंघन न करें ताकि उसके इस कृत्य के कारण समाज में नैतिकता का पतन होता है। नारी भी पुरातन काल से आज तक चली आई इस मान्यता को मानती आई है। हमेशा यही सोचती है कि चाहे जो कुछ हो परंतु उसके हाथों किसी भी प्रकार का अनैतिक व्यवहार नहीं होना चाहिए। जब किसी नारी द्वारा मजबूरी में ही सही अनैतिक व्यवहार किया जाता है तो समाज में हर जगह उसे लांछन सहना पड़ता है। उसे प्रताड़ित किया जाता है। हर नुक्कड़, गली में उसे लेकर लोग ताने कसते हैं। आरिगपूडि की लिखी कहानी `उलझे संबंध` में विधवा अंबिका देवी अपने ही दामाद के साथ शारीरिक संबंध रखती है। जब लोगों में इस बात की चर्चा होने लगती है तो वह दामाद के साथ मद्रास छोड़कर सिंगापुर भाग आती है। यहां अंबिका देवी अपनी काम-तृप्ति करने के लिए अपने दामाद का सहारा लेती है। यही बात समाज को नहीं सुहाती। समाज उसे प्रताड़ित, बेइज्जत करने लगता है। जब कोई पुरूष अपनी काम-पिपासा शांत करने के लिए एक से अधिक औरतों से शारीरिक संबंध रखता है तो समाज उस पर कोई आपत्ति नहीं उठाता। अंबिका देवी जैसी नारी जब इस प्रकार का कृत्य करती है तो वह समाज की दृष्टि से नैतिकता का पतन होता है। ऐसी नारी को समाज बहिष्कृत करता है। उसे हर जगह हर व्यक्ति की आलोचना को सहना पड़ता है। समाज उसका जीना दूभर कर देता है। इस कारण अंबिका देवी अपनी बेटी के ही कहने पर सिंगापुर भाग आती है। फिर

भी लोग उनके पीछे उनकी चर्चा करते ही हैं। जैसे `सिंगापुर बेखबर थी उनके संबंधों के बारे में लेकिन मद्रास में कानाफूसी हो रही थी उनके बारे में।``[14]

जगवीर सिंह वर्मा की लिखी कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` की विधवा भी अपना मन मारकर लोक लज्जावश अपना दूसरा घर नहीं बसाती क्योंकि उसे लोगों के द्वारा दिए जानेवाले तानों का डर है। जेसे ``पति के गांव में ही दामाद के घर मन के खिलाफ रह सकती है सुदामा, मगर अपना घर मन में रहते भी नहीं बसा सकती, क्योंकि अब लड़की दो वर्ष की नहीं और उसकी उम्र भी तीस वर्ष की न होकर बयालीय बरस की हो गयी है।``[15] तात्पर्य यह कि जब शादी की उम्र थी तो बेटी नासमझ थी। बहुत ही छोटी थी। उसके प्रति अपने कर्तव्य को समझ सुदामा शादी नहीं करती। जब बेटी का हाथ रामप्रसाद के हाथ में देती है तब अपने बारे में सोचती है परंतु इच्छा होने के बावजूद अपना घर दूबारा नहीं बसाती। उम्र बित जाने के कारण उसे लोक-लाज का डर लगता है। इस प्रकार पति के मरने के बाद दूसरा घर बसाने की, अपनी काम-वासना तृप्त करने की अदम्य लालसा होने के बावजूद नैतिक मूल्यों के विघटन के कारण समाज द्वारा दिए जानेवाले लांछन तथा अपमानजनक व्यवहार से बचने के लिए औरत समाज निर्दिष्टित नियमों के खिलाफ न जाकर उनका पालन करती है।

**3. परंपरागत संस्कार :-**

आधुनिक युग में अनगिनत वैज्ञानिक अविष्कारों के साथ 21 वी सदी में पदार्पन करनेवाले हमारे समाज ने अभी तक हमारी परंपरागत सांस्कृतिक मान्यताओं को अपने साथ घसीट लाया है। ये परंपरागत संस्कार भी नारी के सामने एक समस्या बनकर खड़े रहते हैं। इन संस्कारों, अन्याय के विरूद्ध वह विद्रोह करना चाहे तो भी उसे परंपरागत संस्कारों की याद दिलाकर उसके विद्रोह को दबाया जाता है। छोटी बच्चियाँ भी अपनी मां के संस्कारो का अनुकरण करती है इन संस्कारों के कारण उनके सामने जो समस्याएँ खड़ी हो जाती है उससे वे अंजान ही होती है।

भारतीय संस्कृति में औरत बड़े-बूढों के सामने अपने पति से शरमाती है। शरमाकर अपना मुँह आँचल में ढक लेती है। इसी बात को लेकर सुप्रसिद्ध लेखक यशपाल ने `फूलो का कुर्ता` कहानी में इस परंपरा पर करारा व्यंग्य करते हुए शर्म से मुँह ढकने की समस्या प्रस्तुत की है। प्रस्तुत कहानी की फूलो, जिसका विवाह बचपन में ही पड़ोस के गांव में रहनेवाले संतू के साथ तय हुआ है। फूलो बच्ची है और अपने बचपन के साथियों के साथ खेल रही थी कि अचानक फूलो का दुल्हा संतू वहां आ जाता है।

संतो को देखते ही लड़के फूलो को चिढ़ाने लगते हैं। माँ के संस्कारों में पली फूलो शरमा जाती है। वह यह नहीं सोचती कि उसने कुर्ते के अंदर कुछ भी नहीं पहना है। उसे तो सिर्फ यही याद रहता है कि उसकी माँ बड़ों के सामने शरमाकर अपने आंचल से मुँह ढ़क लेती है। फूलो भी अपने कुर्ते से अपना मुँह छुपा लेती है। नतीजा वह नंगी दिखाई देती है। वास्तव में शरमाकर अपनी झेप मिटाने के लिए फूलो जिस बात को छुपाना चाहिए उसे खुला करती है और अपना मुँह ढ़ंक लेती है। इस बात के लिए उसके संस्कार ही उसे प्रेरित करते हैं। ``उसने अपनी मां को, गांव की सभी भली स्त्रियों को लज्जा से घुंगट और पर्दा करते देखा था। उसके संस्कारोंने उसे समझा दिया था, लज्जा से मुँह ढक लेना उचित है।``[16] तात्पर्य यह कि लेखक ने यहाँ परंपरागत संस्कार किस प्रकार नारी के सामने कठिनाई पैदा करते हैं यह बताने की कोशिश की है।

नारी जब परिवार के अत्याचार से पीड़ित होती है तब घर की बड़ी-बूढ़ी औरत परंपरागत संस्कारों की दूहाई लेकर चूपचाप अत्याचार को सहने के लिए प्रेरित करती है। बूटा सिंह द्वारा लिखी `तीन सतियाँ `कहानी की नायिका सत्या रानो को उसी का ससूर जब जबरदस्ती भोगता है तो वह रोती-बिलखती सास को बताती है। सास उसकी मदद करने की अपेक्षा उसे समझाती है - ``बीबी, तेरी भलाई इसी में है कि खामोश होकर सह जा सबकुछ ! ---खानदानी घरों की बेटियाँ, अंदर सड़कर मर जाती हैं, बाहर भनक तक नहीं निकलने देती !``[17] तात्पर्य यह कि अपने परिवार की इज्जत बचाने के लिए खानदानी नारी अनगिनत अत्याचारों को सहकर भी किसी और के सामने परिवारवालों के खिलाफ अपना मुँह नहीं खोलती। ये खानदानी संस्कार भी परंपरा से ही नारी को प्राप्त होते हैं। नासिरा शर्मा की लिखी `दस्तक` कहानी में घर की झूठी मान-मर्यादा और शान के लिए विवाहित शबाना को उसके पति काजिम से परिवारवाले अलग करते हैं। शबाना कोई विद्रोह न करे इसीलिए अपने परिवार की दिवंगत औरतों के उदाहरण देकर उसके जोश को ठंडा कर देते हैं। शबाना को बताया जाता है कि उसके परिवार की औरत ने कैसे पति के हाथ-पाँव पड़ने पर भी ससूराल जाने से इन्कार किया था। ``हमारा खानदान कौन-सा कम है। लड़कियाँ मर जाती हैं मगर नालायक ससूरालवालों का मुँह नहीं देखती। कितनी जिंदा मिसाले उन्हें चाहिए। अगर याद न आये तो कज्जो, फुफी को याद कर लें जो उनके खानदान में ब्याही थी। मियाँ के नाक रगड़ने पर भी उन्होंने उनकी ड्योढ़ी पर थूका तक नहीं था।``[18]

इस प्रकार परिवार की बीनी मिसालें और परंपरागत संस्कार नारी के सामने समस्या बनकर खड़े होते हैं।

**4. लैगिंक अज्ञान :-**

भारतीय संस्कृति में खूली तौर पर लैंगिकता व सेक्स के विषय में चर्चा करना पाप और अपराध समझा जाता है। ऐसी चर्चा करनेवालों को घृणित नजरों से देखा जाता है। अत: यहाँ के बच्चों को लैंगिक शिक्षा की आवश्यकता व सेक्स संबंधी जानकारी मिलनी चाहिए, परंतु नहीं मिलती। इस संबंध में लड़कों को अपने समवयस्क मित्रों द्वारा जानकारी प्राप्त होती है। लड़कियों को उनकी सहेलियों व माता के द्वारा इस जानकारी से अवगत किया जाता है। परंतु जो लड़कियाँ अपनी माँ से दूर रहती हैं या जिनकी माँ नहीं होती, बचपन में ही मर जाती है, जिनकी कोई सहेली नहीं होती ऐसी लडकियाँ इस विषय में अनभिज्ञ रहती हैं। यही अनभिज्ञता आगे चलकर उनके सामने एक समस्या का रूप लेकर खड़ी होती है।

यशपाल द्वारा लिखी `धर्मरक्षा` कहानी की ज्ञानवती को बचपन ही में पिताजी अपने साथ ले जाते हैं। माँ के मरने के उपरांत दादा-दादी के लाड़-प्यार से लड़की का भविष्य खराब हो जाएगा इसी डर से ज्ञानवती के पिता उसे ब्रह्मचर्याश्रम में भरती करते हैं। आश्रम में ज्ञानवती को लड़की होकर भी लड़कों जैसा जीवन बिताना पड़ता है। उसकी कोई सहेली भी नहीं है। इस कारण ज्ञानवती सेक्स व लैंगिकता के बारे में अज्ञानी ही रहती है। इस अज्ञान के कारण नौकर मोतीराम के बहकावे में आकर वह अपना शरीर उसे समर्पित करती है। जैसे- ``मोतीराम की उग्रता के सम्मुख मधुर पराजय स्वीकार करने के लिए कर्तव्य का ज्ञान रहते-रहते ज्ञानवती ने मोतीराम के चंचल हाथों को अपने शिथिल हाथों में रोककर समझाया `जल्दी से विवाह मंत्र पढ़ लो। ओम विष्णुर्यीनि कल्पबतुत्वष्ठा।``[19] यहां लेखक यशपाल जी ने अपनी संस्कृति, उसकी झूठी मान्यताएँ व परंपराओं पर प्रहार किया है और अपनी कहानी द्वारा लैंगिक शिक्षा देने की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित किया है। अगर ज्ञानवती को सेक्स तथा लैंगिकता के संबंध में जानकारी होती तो वह मोतीराम के बहकावे में नहीं आती और न उसे अपना शरीर सौंप देती। इस कर्म के कारण सामने आनेवाली बिकट परिस्थिति का उसे ज्ञान होता। ऐसी कितनी ही अबोध युवतियाँ हैं जो लैगिंक अज्ञान के कारण मोतीराम जैसे पुरूषों के मोहपाश में पड़ती है और अपना सर्वस्व खो देती हैं। कहने का तात्पर्य यह कि लैंगिक अज्ञानता भी नारी के सामने आनेवाली एक बिकट तथा महत्त्वपूर्ण समस्या है।

**5. दहेजप्रथा : -**

भारतीय समाज में दहेज की प्रथा नारी के व्यक्तित्व तथा उसके जीवन में जहर घोल देती

है। आजतक अनेक युवतियाँ दहेज-प्रथा के कारण मौत को गले लगा चूकी हैं। कुछ युवतियाँ पिता की निर्धनता के कारण कुंआरी बैठती हैं।दहेज में देने के लिए धन न होने के कारण उनका विवाह नहीं होता। कई युवतियों को शादी होने के बाद भी मैके से दहेज या महंगी वस्तुओं को लाने के लिए कहा जाता है। पिता समृद्ध हो तो ससूरालवालों की बात मान कर मांगे पूरी भी की जाती है। पिता असमर्थ व निर्धन हो तो दहेज की मांग पूरी न करने के कारण सास-ससूर तथा पति के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्य भी युवती को यातनाएँ देते हैं। इन यातनाओं का अंत युवती के अंत के साथ ही होता है। राम आहुजा के अनुसार - ``यद्यपि दहेज निषेधाज्ञा कानून 1961 (डावरी प्रोहिबिशन एक्ट, 1961) ने दहेज प्रथा पर रोक लगा दी है, परंतु वास्तव में कानून केवल यही स्वीकार करता है कि समस्या विद्यमान है। वास्तविक रूप से यह कभी सुनने में नहीं आता कि किसी पति या उसके परिवार पर दहेज लेने के आग्रह को लेकर कोई मुकादमा चलाया गया हो यदी कुछ हुआ है तो यह कि गत वर्षों में दहेज की मांग और उसके साथ-साथ दहेज को लेकर हत्याएँ बढ़ी हैं।``[20] तात्पर्य यह कि दहेज प्रतिबंधी कानून बनने के उपरांत भी दहेज प्रथा को बंद करने में सफलता नहीं मिली है। इसमें दहेज लेनेवाले और देनेवाले दोनों का भी सहयोग नहीं मिलता।

दहेज देने में असमर्थ माता-पिता की पुत्रियाँ या तो कुँआरी रह जाती हैं या फिर किन्हीं अ-सामाजिक तत्त्वों के हाथों में पड़कर किसी कुमार्ग पर चल पड़ती हैं और वेश्यावृत्ति स्वीकारती हैं, अपना शरीर बेचने लगती है। सत्येंद्र शर्मा की लिखी कहानी `शट अप सर` की नायिका सरला अपने पिता की आर्थिक दशा का वर्णन करते हुए अपने अध्यापक से कहती है - ``हम चार बहने हैं। पिताजी के पास पैसा नहीं था कि वह हमें दान-दहेज देकर हमारी डोली विदा करें। सबसे बड़ी बहन की शादी दो साल पहले हुई थी और उससे छोटी की एक साल पहले जब वे तीस-तीस बरस हो गयी --- और यह सब मेरी मेहनत से हुआ।``[21] तात्पर्य यह कि पिता की आर्थिक विपन्नता के कारण सरला को कॉलगर्ल बनकर अपने से बड़ी बहनों की शादियाँ करनी पड़ती हैं।दहेज की इस प्रथा के कारण रमेश आनंद की कहानी `नियंत्रण` में आदर्श के पिता गिरधारीलाल जो कि एक प्रायमरी टिचर है। अपनी सीमित आय के कारण बेटी के अनुरूप वर तलाश नहीं कर सकते। शिक्षित बेटी को उनके द्वारा पसंद किया अधेड़ या विधूर वर पसंद नहीं आता। दान-दहेज देने की उनकी हैसियत नहीं है। अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में वे कहते हैं - ``बच्चे कुँआरे हैं और मैं -- मैं रिटायर होने को आया हूँ---कोई मकान नहीं बन पाया, न ही कोई प्लाट है---।``[22] पिता की इस आर्थिक दशा के कारण वे आदर्श के लिए उचित वर तलाशने में असमर्थ है।

परिस्थिति के साथ समझौता करने के लिए वह शादी ही न करने की घोषणा करती है - ``आदर्श ने घर में घोषणा कर दी कि वह जिंदगी भर शादी नहीं करेगी। भाई-बहनों को पढ़ाने-लिखाने और घर का बोझ संभालने में पापा का हाथ बंटायेगी।``[23] अत: स्पष्ट है कि दहेज यह एक ऐसी प्रथा है जिसके कारण नारी को या तो किसी अधेड या कुरूप इंसान से शादी करके समझौता करना पड़ता है या फिर अपने पैरों पर खड़ी होकर आदर्श की तरह जिंदगी में कभी शादी ही न करने का निर्णय लेना पड़ता है। कुछ युवतियाँ तो किसी के साथ भाग जाती हैं और कुछ तंग आकर आत्महत्या करके पिता का बोझ हलका करती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि दहेज प्रथा समाज निर्मित ऐसी समस्या है जिसके कारण नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

## 6. कुँआरा मातृत्त्व :-

वर्तमान स्थिति में शिक्षा के कारण युवक-युवतियाँ एकत्रित आते हैं। विचारों का मेल होने के उपरांत एक-दूसरे के प्रति उनमें आकर्षण निर्माण होता है। उसका रूपांतर चाहत व प्रेम में होता है। इन प्रेमी युगलों के हाथों जवानी में जो गलतियाँ होती हैं, उन गलतियों के कारण युवतियों को कुँआरी माता बनने का दायित्व निभाना पड़ता है। भारतीय समाज में किसी लड़की द्वारा कुँआरा मातृत्त्व ग्रहण करना उचित नहीं समझा जाता, पाप समझा जाता है, धर्म भ्रष्ट करनेवाला कर्म समझा जाता है। ऐसी लड़कियों को समाज में हर जगह लांछन और अपमान सहना पड़ता हैं। समाज में उनका जीना दुभर होता है। कुछ युवतियाँ गरीबी के कारण किसी धनवान के घर घरेलु कामकाज करने का काम करती हैं। ऐसी युवतियों पर मालिक तथा उनके बेटों द्वारा बलात्कार किया जाता है। तथा छल कपट एवं धन का लोभ दिखाकर भोगा जाता है। परिणामत: ये लडकियाँ कुँआरी माँ बनती हैं। उन्हें समाज में मान-सम्मान न मिलने के कारण तथा हर जगह मिलनेवाली प्रताड़ना के कारण कुमार्गों को अपनाना पड़ता है।

क्वीनी ठाकुर की लिखी कहानी `जानकी` की नायिका जानकी `आफ्टर केअर होम` में रहती है। उसकी इच्छा के कारण वह एक धनी व्यक्ति के यहां बच्चे की देखभाल करने का काम करती है। वहां का मालिक अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में जबरदस्ती जानकी के साथ संभोग करता रहता है। नतिजा जानकी पेट से रहती है। इस कारण जानकी की मालकिन उसे वापस छोड़ देती है। जानकी पेट से है यह बात जब अन्य लड़कियों में फैल जाती है तो सारी लड़कियाँ उसे बेइज्जत करती हैं। उसे ताने देती हैं। बदचलन कहती हैं। इस कारण जानकी सभी लड़कियों से अलग-अलग रहने लगती है। उनके साथ बात

नहीं करती। अपने में ही खोई-सी उदास रहने लगती है। दूसरी लड़कियों की तरह उसकी सहेली भी उसका मजाक उड़ाती है। अन्य लड़कियों के साथ-साथ अपनी सहेली से भी अलग रहने का कारण पूछने पर वह बताती है - ``उसने हमको दूसरी लड़कियों के सामने बदनाम किया है, बदचलन कहा है। अब बताइए न बहनजी, उनसे कैसे दोस्ती रखी जा सकती है, जो बेइज्जती करें ! इज्जत तो सबको प्यारी होती है।``[24] इससे स्पष्ट होता है कि कुँआरी माता बनने जैसा अपराध करने पर जानकी जैसी लड़कियाँ अपने लोगों द्वारा भी सताई जाती हैं। बेइज्जत की जाती हैं। इस बेइज्जती से बचने के लिए ये लड़कियाँ सबसे अलग रहने लगती है।

कुँआरी माता बनने पर नारी को समाज एक कलंकित औरत ही समझता है। ये लडकियाँ अगर शादी करना चाहे तो उनसे कोई शादी करने के लिए तैयार नहीं होता। कोई शादी करने के लिए तैयार भी होता है तो उसके नाजायज बच्चे को अपना नाम देने से तथा उसकी परवरिश करने से इंकार करता है। तात्पर्य यह कि उसके बच्चे के साथ उसे स्वीकारने के लिए कोई तैयार नहीं होता। प्रस्तुत कहानी में जानकी को एक आदमी पसंद करता है। उसे उसके बच्चे के साथ स्वीकारने के लिए तैयार होता है। परंतु दूसरे दिन आकर बच्चे को पालने की अपनी असमर्थता प्रकट करता है। शादी की बात सुनकर पहले तो जानकी बहुत खुश होती है। वह अपने भावी पति के लिए बनने-संवरने लगती है। जब उसे पता चलता है कि बच्चे के कारण उसकी शादी नहीं हो रही। उस आदमी ने बच्चे के कारण उसे स्वीकारने का इन्कार किया तो उसका दिल टूट जाता है। परिणामत: बच्चे के प्रति उसकी ममता नष्ट हो जाती है। पहले बच्चे को प्यार करनेवाली जानकी उससे नफरत करने लगती है। एक दिन बीमार पड़ने के कारण जब बच्चा उसे रोते-रोते तंग करता है, तो जानकी उसे सूखे कुए में फैंककर खतम कर देती हैं। जैसे - ``जानकी ने ललमुनवा को एक कपड़े में लपेटा और वेग के साथ सूखे कुंए की ओर बढ़ी--- कुए पर पहुंचकर जानकी ने ललमुनवा को एक झटकेसे कुए में फेंक दिया। ----और रोने की आवाज बंद हो गई।``[25] इस बात से स्पष्ट है कि बच्चे के कारण जानकी की शादी टूट जाती है। बच्चा जब उसे परेशान करता है तो वह उसे मार ड़ालती है। अत: हम कह सकते हैं कि कुँआरी माता बनना हमारे समाज में एक पाप व धर्म विरोधी कर्म समझा जाता है। ऐसा कर्म करनेवाली माता को समाज का प्रत्येक सदस्य पीड़ित तथा प्रताड़ित करता है। उसे बदनाम करता है। तंग आकर नारी को अपनी संतान को अपने ही हाथों से मिटाना पड़ता है। इस गुनाह के कारण उसे जेल भी जाना पड़ता है। तात्पर्य यह कि यह एक नारी के सामने प्रस्तुत होनेवाली ऐसी

समस्या है जिसका कोई समाधान कहानीकार ने नहीं दिया है।

**7. बाल विवाह :-**

आधुनिक युग में शिक्षा के कारण लोगों में विचार करने की प्रवृत्ति बढ़ गई है। बचपन में विवाह कराने के कारण आनेवाली समस्याओं को लोग पहचानने लगे हैं। इस कारण `बाल विवाह` जैसी समस्या अब न के बराबर है। परंतु यह आधुनिक विचार सुशिक्षित वर्गों में, तथा आर्थिक दृष्टि से प्रगत समझे जानेवाले लोगों में दिखाई देता है। आज भी देहातों में पिछड़े वर्गों में तथा कुछ जातियों में बालविवाह की प्रथा कायम है। 1 अक्तुबर 1978 के कानून के अनुसार शादी के लिए लड़की की उम्र 18 वर्ष तथा लड़के की उम्र 21 वर्ष होनी आवश्यक है। परंतु कानून की इस धारा का आज भी उल्लंघन किया जाता है। और बालविवाह होते ही रहते हैं। सुमन पाटे के अनुसार - ``इस कानून को तोड़ने पर कोई फरियाद करने पर ही उस पर अमल किया जाता है। कोर्ट या कानून तोड़ने पर भी अनदेखा करते हैं। इस कारण बहुत सारे बालविवाह होने पर भी उनके विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जाती।``[26] तात्पर्य यह कि कानून के रखवालों की घुस खाने की वृत्ति के कारण ही आजतक बालविवाह होते हुए भी उन्हें रोकने का कोई प्रयास नहीं करता।

दहेज से बचने के लिए कुछ लोग बचपन में ही लड़कियों का विवाह कर देते हैं। कुछ लोगों के सामने सामाजिक असुरक्षा का प्रश्न होता है अत: वे समय से पहले ही अपनी बेटी का विवाह करना उचित समझते हैं।

जगवीर सिंह वर्मा की लिखी कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` में सुदामा पति की मृत्यु के बाद अकेली हो जाती है। चारों ओर से समाज उसे पीड़ित करना चाहता है। उसके पति का दोस्त एहसान के बदले उसे भोगता है। बेटी को भी भोगने की इच्छा रखता है। समाज के अत्याचारों से बचने के लिए तथा पति के दोस्त के हाथों अपनी बेटी खराब न हो इस हेतु को सामने रखकर सुदामा परसादी की शादी अल्पायु में ही कर देती है। परसादी इतनी छोटी और नासमझ है कि वह शादी पति, सास-ससूर का मतलब ही नहीं समझती। रात को सोने के समय वह पति रामप्रसाद के साथ सोने की अपेक्षा माँ के पास सोना चाहती है। जैसे - ``माँ, मां, मोकू अपने ढिंग सुवाय ले।``[27] इस बात से स्पष्ट होता है कि बचपन में विवाह होने के कारण नासमझ परसादी को शादी तथा पति के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

परसादी जैसी अनेक लडकियाँ हैं जिनका कम उम्र में विवाह तो हो जाता है परंतु वे विवाह का मतलब नहीं जानती। यशपाल की लिखी कहानी `फूलो का कुर्ता` में फूलो की शादी भी संतू के साथ बचपन ही में तय की जाती है। और लोगों के कहने पर फूलो संतो को अपना पति मानती है। माँ की तरह पति के सामने शरमाती भी है। परंतु पति इस शब्द के अर्थ से वह अंजान ही रहती है। बाल उम्र में हुए विवाह के कारण आनेवाली समस्या को कहानी के द्वारा लेखक सिंह ने बताने की कोशिश की है। उनके अनुसार- पति शब्द से अंजान, बचपन के कारण पत्नी के द्वारा अपमान, साथियों के साथ खेलने की इच्छा आदि समस्या उस लडकी के सामने आती हैं। अत: बालविवाह नारी जीवन में आनेवाली अत्यंत कठिन समस्या है।

**8. परित्यक्ता :-**

जिस नारी का पति द्वारा त्याग किया जाता है उस नारी को परित्यक्ता नाम से अभिहित किया जाता है। नारी के परित्यक्ता होने के अनेक कारण होते हैं, जैसे दहेज की कमी, विवाह बाह्य संबंध, विवाह के पहले किया प्रेम, सास-ससूर का कहना न मानना, पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद और कभी-कभी तो दोनों परिवारों के आपसी मनमुटाव के कारण भी नारी को परित्यक्ता का जीवन व्यतीत करना पड़ता है। परिवार के अपासी संबंध बिघड़ने के कारण पति-पत्नी को अपनी इच्छा के विरूद्ध अलग रहना पड़ता है। इस बात को लेकर नासिरा शर्मा ने `दस्तक` कहानी का कथानक प्रस्तुत किया है। कहानी की नायिका शबाना की शादी घरवालों की इच्छा से काजिम के साथ होती है। दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहते भी हैं। परंतु दोनों के परिवार में कलह निर्माण होता है और दोनों की इच्छा के विरूद्ध उन्हें अलग किया जाता है। जैसे - ``चौथी में गये लोगों को लेकर ही मीर साहब की त्योरियों पर बल पड़े थे। फिर बलि में की दावत ने उसको गुस्से में बदल दिया ---, दो मास बाद खुशी का चांद निकला और ससुरालवाले आये तो जाने मीर साहब को क्या हो गया था, लड़की भेजने से इन्कार कर दिया और आलोचनाओं की सूची थमा दी।``[28] तात्पर्य आपसी कलह के कारण ही पति-पत्नी को उनके परिवारवाले अलग करते हैं।

काजिम और शबाना एक-दूसरे को चोरी-चोरी मिलते भी हैं। परंतु जब उन्हें मिलते देख लिया जाता है तो उनका आपस में मिलना-जुलना बंद किया जाता है। काजिम की याद में शबाना जलने लगती है। वह बीमार पड़ती है। उसे हर तरह के वैद्य को दिखाया जाता है। महंगी दवाइयाँ दी जाती है परंतु उसकी असली दवा तो पति से मिलन है। उसे वही दवा नहीं मिलती अत: वह काजिम की याद में तील-

तील कर मर जाती हैं। रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` की नायिका घर से भाग जाती है और घरवालों की मर्जी के खिलाफ शादी करती है। आपसी मतभेद के कारण पति उसे छोड़ देता है। परित्यक्ता होने के बाद उसे घर में भी सहारा नहीं मिलता अत: वह पेट भरने के लिए पहले तो भीख मांगती है और बाद में वेश्यावृत्ति को स्वीकारती है। इस प्रकार परित्यक्ता नारी के सामने अपने पति के बिना जीवन बिताने की बहुत बड़ी समस्या होती है।

**9. अनमेल विवाह :-**

आर्थिक विपन्नता के कारण दहेज देने में असमर्थ माता-पिता लडकियों का विवाह अधेड़ या विधूर पुरुष के साथ कर देते हैं। ऐसे वक्त जो समस्याएँ खड़ी होती हैं उनमें वैचारिक मतभिन्नता प्रमुख समस्या के रूप में सामने आती है। अनमेल विवाह के कारण ही विधवाओं की संख्या में वृद्धि होती है। विशेषत: अनमेल विवाह निर्धन परिवार की लड़कियों के होते हैं। माता-पिता निर्धन होने के कारण बेटी को योग्य वर की तलाश करने में असमर्थ होते हैं। विवाह कराना यह सामाजिक बंधन है, इस कारण जैसे भी हो बेटी का विवाह कर देते हैं। चाहे पति अधेड ही क्यों न हो। सुमन पाटे के अनुसार, ``जहाँ कम दहेज दिया जाता है वहाँ लडकियाँ खपाने का प्रयत्न करने के कारण लड़कियों को अनमेल लड़कों से विवाह करना पड़ता है। इस कारण दोनों की उम्र में जादा अंतर होना, दोनों की पसंद-नापसंद भिन्न होना, एक दूसरे की पसंद के बिना ही शादी करना आदि समस्याएँ व्युत्पन्न होती हैं।``[29]

जगवीर सिंह वर्मा की लिखी कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` सामाजिक सुरक्षा का विचार करके सुदामा परसादी की शादी रामप्रसाद के साथ कर देती है जो परसादी के पिता की उम्र का है। परसादी अभी विवाह के मामलों से अनभिज्ञ है। वह पति के साथ सोने से इन्कार करती है। पति के पास सोने पर पति उसके साथ काम-क्रीड़ा करता है तो परसादी उससे घृणा करती है। जैसे - ``मुझे यह आदमी अच्छा नहीं लगता। घिन आती है।``[30] स्पष्ट है कि पति-पत्नी के संबंध के बारे में परसादी बिल्कुल अंजान व नासमझ है। उसकी उम्र खेलने की, घुमने-फिरने की, तथा पढ़ने लिखने की है। परंतु शादी के उपरांत उसकी स्वतंत्रता पर रोक लगा दी जाती है, तब उसके मन नें तरह-तरह की बातें आती हैं। जैसे -``संग की लड़कियों के साथ बतियाने की, खेलने कूदने की, सलवार-कुर्ता पहनने की, पढ़ने-लिखने की, हाट-बाजार में घूमने की, खाने-पीने की, रामप्रसाद के अलावा वह किसी दूसरे हम-उम्र लड़के के बारे में सोचती है। ऐसे लड़के के बारे में, जो मन को भोय।``[31] अत: स्पष्ट है कि परसादी रामप्रसाद को अपना पति मानने के

पक्ष में नहीं है। वह तो रामप्रसाद को अपने पिता की जगह मानती है। रामप्रसाद की जगह उसके मन में अपने हमउम्र लड़के की चाहत निर्माण होती है। इस प्रकार की वैचारिक भिन्नता के साथ-साथ उम्र की भी समस्या सामने आती है। जब लड़की युवती बन जाती है तो उसका पति बुढ़ा बन जाता है। यही सोचकर रामप्रसाद कहता है - ``यह नेक-सी छोकरी तो राजा महाराजाओं की `डोली` से भी कहीं महंगी और परेशानी पैदा करनेवाली पड़ी है। जब तक वह जवान होगी, वह बुढ़ा हो जाएगा। जब तक यह औरत का मतलब समझेगी, तब तक औलादवाली हो जाएगी। तब पत्नी या औरत की तरह व्यवहार पाने की उसकी इच्छा भी मर जायेगी।``[32] अत: स्पष्ट है कि पत्नी जवान होती है और पति बुढ़ा हो जाता है। वह पत्नी की काम-तृप्ति करने में भी असमर्थ होता है। पत्नी अपनी काम-वासना शांत करने के लिए किसी और पुरूष की शरण में जाती है।

हमीद जबीं की लिखी कहानी `गुनहगार` में हाजी साहब अपनी 60 वर्ष की उम्र में सोलह-सत्रह वर्ष की आयु वाली लड़की मे शादी करते है। नारी के साथ शादी करने पर पति का कर्तव्य होता है कि उसे हर तरह से संतुष्ट करें नहीं तो उसके कदम बहकने लगते हैं। हाजी साहब शादी तो करते हैं परंतु पत्नी को संतुष्ठ नहीं कर सकते। अपनी शारीरिक काम-तृप्ति के लिए हाजी साहब की पत्नी रेशम अपने सौतेले पुत्र के साथ नाजायज संबंध रखती है। वास्तव में रेशम हाजी साहब के पुत्र की उम्र की थी। उसे पुत्रवधु बनाने के बजाय हाजी साहब पत्नी बनाते हैं। अत: रेशम अपने वयस्क पति को छोड़कर जवान सौतेले बेटे के साथ शारीरिक संबंध रखकर खुशी हासिल करती है।उसके चेहरे पर एक अलग ही चमक दिखाई देती है। जैसे - ``उसकी चेहरे पर वही संतोष झलक रहा था, जो बारिश के बाद गांव के लोगों के चेहरों पर नूर बरसा रहा था।``[33] तात्पर्य यह कि बुढ़े पति के कारण उदास बनी रेशम पुत्र के प्रेम को पाकर उल्हासित व आनंदी हो जाती है। इस तरह `इस्मत चुगताई` ने अपनी कहानी `लिहाफ` में अनमेल विवाह के कारण उत्पन्न काम-तृप्ति की समस्या को उद्घाटित किया है। प्रस्तुत कहानी की बेगमजान की शादी अधेड़ नवाब के साथ होती है। नवाब पति का पत्नी के प्रति जो कर्तव्य होता है, उसे पूरा करने के लिए कभी पत्नी बेगमजान के पास नहीं जाते। जैसे ``वह बेगमजान से शादी करके उन्हें जीवन की तमाम सुख-सुविधाएँ मुहैया करके उन्हें भूल-सा गये थे।``[34] नवाबसाहब की ओर से उदास होकर बेगमजान काम-तृप्ति के लिए नौकरानी रब्बू का इस्तेमाल करती है। रब्बू से अपने शरीर की मालिश करवाकर उसे तृप्ति का एहसास होता है। एक तरह से वह रब्बू के साथ समलिंगी संभोग ही करती है। इस प्रकार अनमेल

विवाह के कारण काम-तृप्ति की समस्या सामने आती है। इस समस्या का समाधान करने के लिए नारी हमेशा छटपटाती रहती है। समस्या का समाधान करने के लिए किसी अन्य पुरूष की तलाश करती है या फिर बेगमजान की तरह समलिंगी संभोग करके काम-वासना शांत करने का प्रयास करती है।

## 10. वैधव्य :-

भारतीय समाज में जिस नारी के पति की मृत्यु हो जाती है वह विधवा कहलाती है। सभी विधवाओं के सामने एक जैसी समस्याएँ नहीं होती, समस्याओं का स्वरूप उनकी उम्र पर निर्धारित होता है। कुछ ऐसी औरतें होती हैं जिनके पति वृद्धावस्था में गुजर जाते हैं, ऐसी औरतों के कांधे पर कोई उत्तरदायित्व नहीं होता क्योंकि परिवार को चलाने के योग्य उनके बेटे तथा बहुएं होती हैं। जो औरते अपनी जवानी में विधवा हो जाती है उन्हें अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उस पर भी अगर बच्चों की परवरिश का भार हो तो ये औरतें सभी प्रकार की समस्याओं से घीर जाती हैं। ऐसी विधवाओं को अपने बच्चों की परवरिश के लिए मां-बाप दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है। उनके प्रति अपने कर्तव्य पर सजग रहना पड़ता है। राम आहूजा के विचार में - ``सब विधवाएँ एक ही प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करती । एक विधवा ऐसी हो सकती है जिसके कोई बच्चा न हो --- या वह ऐसी हो सकती है जो पांच से 10 वर्ष के पश्चात विधवा होती है और उसके एक या दो बच्चे पालने के लिए हो, या ऐसी जो पचास वर्ष की आयु से अधिक हो ----पहले दो किस्म की विधवाओं को जैविक समंजन की समस्या का भी सामना करना पड़ता है। इन दो किस्म की विधवाओं का अपने पति के परिवार में इतना आदर-सत्कार नहीं होता जितना की तीसरी किस्म का। ``[35] तात्पर्य यह कि युवावस्था में वैधव्य को प्राप्त करनेवाली विधवाओं को बुढ़ापे में वैधव्य को प्राप्त करनेवाली विधवाओं की अपेक्षा परिवार व समाज द्वारा दी जानेवाली अनंत यातनाओं को सहना पड़ता है। ऐसी अवस्था में विधवा पर अगर संतान की परवरिश का भार हो तो उस कर्तव्य को भी उसे ही निभाना पड़ता है। ऐसे वक्त उसे जिन-जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनका विवेचन `आधी उम्र की पूरी औरत` और `उलझे संबंध` कहानियों में किया है।

जगवीर सिंह वर्मा की कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` में विधवा सुदामा के जिम्मे एक बेटी है। इसके अलावा उसका कोई सहारा नहीं है। समाज में रहनेवाले कामांध पुरूषों से अपनी तथा बेटी की इज्जत की सुरक्षा के लिए सुदामा बेटी का हाथ अधेड़ रामप्रसाद के हाथ में देती है और उसके

आश्रय में रहती है। अकेली सुदामा को उसके अपने देवर तथा समाज में रहनेवाले प्रतिष्ठित लोग अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु सुदामा पर अत्याचार करते हैं । जैसे ``पेंशन में भी उसके देवर वगैरह ने चक्कर डाल दिया है कि वह बहोरन की पत्नी नहीं, रखैल है और पेशंन के हकदार वे लोग हैं। पहले तो ग्राम प्रधान ने भी लिखकर दे दिया कि वह बहोरन की पत्नी है और अकेली वही वारिश है, बाद में कुछ लोगों के दबाव पर वह भी बात बदलता है।``[36] तात्पर्य यह कि स्वार्थांध समाज और अपने देवरों के स्वार्थी वृत्ति के कारण सुदामा को पेंशन प्राप्त करने के लिए अपने ही पति बहोरन की पत्नी होना सिद्ध करना पड़ता है। जब वह बेटी की सुरक्षा हेतु अल्पायु में ही उसका हाथ रामप्रसाद के हाथ में देती है तो उसे पीड़ित करने के लिए उस पर `शारदा एक्ट` लगाने की बात समाज में चलती है। ऐसे वक्त विधवा की कोई मदद नहीं करता। और करता भी है तो अपने निजी स्वार्थ को पूरा करने के लिए या फिर अपनी हावस का शिकार बनाने के लिए। सरिता राय के अनुसार - ``विधवा होना एक कलंक भी है। विधवा स्त्री चाहे कितनी ही अच्छी तथा चरित्रवान क्यों न हो, पर समाज में रहने वाले नरपशु उसे अपनी कामवासना का शिकार बनाने के लिए तत्पर रहते हैं।``[37] सुदामा के साथ भी यही होता है। पति का दोस्त ही मदद करने के बदले उसे भोगता है, साथ में बेटी को भी भोगने की इच्छा रखता है। जैसे - ``उसके पति का एक घनिष्ठ मित्र --- उसी ने करवाया था उसका ब्याह ---सहायता के बदले में उसे भोगता है, एहसान अलग लादता है। उसकी नीयत लड़की को भोगने की हो जाती है।``[38] इस बात से स्पष्ट होता है कि अकेली जवान विधवा की मदद करने के बदले लोग उसे अपनी वासना का शिकार बनाते हैं। जब यही बात बेटी के साथ होने की नौबत आती है तो सुदामा अपनी नाबालिग बच्ची का हाथ बिना गाजे बाजे के ही रामप्रसाद के हाथ में देती है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने विधवाओं के सामने आनेवाली काम-तृप्ति की समस्या को भी प्रस्तुत किया है। पति के साथ सुख भोगनेवाली सुदामा पति के मरने के बाद काम-ज्वर से पीड़ित होती है। जैसे - ``फिर आदमी की प्यास के मारे वह तड़पती है। बिस्तर उसे काटता है, वक्त जम जाता है, रात का अंधियारा उसे भयभीत करने लगता है।``[39] इस बात से स्पष्ट होता है कि विधवा नारी के सामने सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ अपनी शारीरिक कामतृप्ति की समस्या भी होती है। परंतु लोक-लाज के कारण वह अपनी इच्छा मन में ही दबाए रखती है। और सुदामा की तरह स्वप्न द्वारा काम-तृप्ति का एहसास करती है। कुछ विधवाएँ आरिगपूडि की लिखी कहानी `उलझे संबंध` की अंबिकादेवी जैसी होती हैं, जो अपनी काम-तृप्ति के सामने सभी सामाजिक नैतिक बंधनों को गौण मानती है। अंबिका देवी अपने

ही दामाद के साथ नाजायज संबंध रखती है। सुख प्राप्त करती है। एक तरह से दामाद न होकर राजन उसका पति है। अंबिका देवी की बेटी शीला अपने माता और पति के नाजायज संबंधों को जानती है फिर भी उनका विरोध नहीं करती। क्योंकि वह मां को वह सुख देना चाहती है जो बाप के जीवित काल में नहीं मिला। मद्रास में जब पति और मां अंबिका देवी के संबंधों को लेकर चर्चा होने लगती है तब शीला खुद माँ और पति राजन को सिंगापुर जाने की सलाह देती है। वह माँ से कहती है - ``आप हो आओ। मैं अभी छोटी हूँ, मेरे सामने जिंदगी है मेरी फिक्र न करो, मेरी शादी तो फिर भी हो सकती है।``[40] बेटी के कहने पर अंबिका देवी दामाद के साथ सुखी जीवन की तलाश में सिंगापुर आती है। परंतु यहाँ आते ही उसे बेटी के प्रति अपने कर्तव्यबोध का ज्ञान होता है कर्तव्य की याद आते ही सुख की तलाश में आई अंबिका देवी दु:खी बन जाती है। वह खुद की आलोचना करती है। लोक रीति की बातों को याद करके वह कहती है - ``लोग कहते हैं कि लड़की रजस्वला हो जाये तो मां-बाप चैन से नहीं सो सकते और एक मैं हूँ।``[41] इस बात से स्पष्ट है कि अंबिका देवी समाज के सारे नैतिक बंधनों को तोड़कर सुख की लालसा से अपने दामाद के साथ सिंगापुर भाग तो जाती है परंतु उसे अपने बेटी के प्रति जो कर्तव्य है चैन से नहीं बैठने देता और वह पीड़ित हो जाती है। तात्पर्य यह कि संतान के प्रति कर्तव्य भावना के कारण विधवाएँ अपना दूबारा घर भी नहीं बसा सकती। यह एक उनके सामने आनेवाली बहुत बड़ी समस्या है।

### 11. बलात्कार :-

पुरूष अपनी कामवासना तृप्त करने के लिए बलपूर्वक नारी को उसकी इच्छा के विरूद्ध भोगता है। उसमें न तो स्त्री की इच्छा होती है और न प्रेम। न एक दूसरे के प्रति आकर्षण होता है। स्त्री की शारीरिक दूर्बलता का अनुचित लाभ उठाकर पुरूषों द्वारा स्त्री का लैंगिक शोषण किया जाता है। इसी को बलात्कार कहा जा सकता है। सुधा कालदाते के अनुसार - ``नारी को हर वक्त अधिकार में रख उस पर हुकूमत चलाने के लिए उपयोग में लाई जानेवाली पुरूषों की क्लृप्ति याने बलात्कार! बलात्कार का अर्थ है स्त्री की इच्छा के विरूद्ध उसके साथ बलपूर्वक संभोग करना।``[42] बलात्कार अनेक कारणों से होते हैं। जैसे -पुरूष की कामेच्छा तृप्ति की भावना, नारी से प्रतिशोध लेने की भावना, बडप्पन दिखाना, नारी को बदनाम करना आदि। बलात्कार के कारण नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक तो बलात्कारित नारी शारीरिक, मानसिक रूप से पूर्णत: टूट जाती है। पुरूषों की बजाय नारी की ही बदनामी होती है। बलात्कारित नारी के साथ कोई विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता। बलात्कार के

कारण कुछ युवतियों को कुँआरा मातृत्व प्राप्त होता है। विवाहित नारी पर बलात्कार होने पर उसके साथ-साथ परिवारवालों की भी समाज में बदनामी होती है। इस तरह अनैकानेक समस्याओं का सामना बलात्कारित नारी को करना पड़ता है।

बीर राजा द्वारा लिखी कहानी `भोली` की नायिका भोली पर बलात्कार होता है। वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। उसके सामने कोई भी पुरूष आए तो वह बलात्कारी समझकर उसे नोचने- खचोटने लगती है। भोली अपने मंगेतर को ही बलात्कारी समझकर उस पर झपटती है। जैसे - ``मार डालूंगी बदमाश ----- छोड़ मुझे ---उसके दांत मेरे गालों में गढ़ गये और मेरे सिर के बा उखडकर उसके हाथों में चले गये।``[43] इस बात से स्पष्ट होता है कि नारी के शरीर की अपेक्षा उसके मन मस्तिष्क पर बलात्कार का गहरा आघात पड़ता है और वह मानसिक रूप से टूट जाती है। बलात्कार में उसका कोई दोष नहीं होता फिर भी नारी अपने को ही दोषी मानती है। वह सोचती है कि अब वह किसी की भी पत्नी बनने के लायक नहीं रही, उसका शरीर भ्रष्ट हो गया है, वह अपवित्र हो गई है। प्रस्तुत कहानी की नायिका भोली भी बलात्कार के कारण खुद को दोषी समझ कर अंदर से दरवाजा बदं करके घर में बैठती है। वह समझती है कि समाज में उसका अपमान होगा। समाज उसकी आलोचना करेगा। तरह-तरह के ताने देगा। इस बात के डर से मंगेतर के आने पर भी उसके लिए भोली दरवाजा नहीं खोलती। जब मंगेतर जबरदस्ती दरवाजा खोलकर अंदर जाता है तो भोली उससे दूर भागने लगती है। वह अपने शरीर को अपवित्र समझ कर उसे छुने नहीं देती। ``चूप करो मुझे मत छुओ।``[44] बलात्कार का शिकार हो चूकी है यह जानने के उपरांत भी उसका मंगेतर उससे शादी करने के लिए तैयार होता है। भोली को समझाते हुए वह कहता है कि शादी के बाद वह उसे लेकर कही दूसरी जगह चला जाएगा, तब भोली कहती है - ``कही जाने से क्या मैं बदल जाऊँगी।``[45] अत: स्पष्ट है कि नारी बलात्कार की दोषी अपने-आप को ही समझती है व खुद ही खुदपर अत्याचार करती है। वह समझती है कि वह अपवित्र हो चुकी है। परिवार की समाज द्वारा की जानेवाली आलोचना का कारण भी वही है। बलात्कारीत नारी के कारण उसका परिवार समाज में चर्चा का विषय बन जाता है। इस चर्चा से बचने के हेतु परिवारवाले न तो इस घटना का उल्लेख करते हैं और न ही वे अदालत में जाकर न्याय की मांग करते हैं।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि नारी पर होनेवाले अत्याचारों के कारण जो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं और जिनके कारण समाज तथा समाज-व्यवस्था प्रभावित होती है वे समस्याएँ सामाजिक

समस्या के अंतर्गत आती हैं।

वेश्या समस्या :- (वेश्यावृत्ति)

`सारिका` पत्रिका के कहानियों में चित्रित वेश्या जीवन इस अध्याय में वेश्या नारी की समस्याओं का विस्तार से चित्रण किया है। साथ ही वेश्यावृत्ति की समस्याओं का भी विवेचन किया है अत: दुहरावट टालने के हेतु यहाँ अलग से विवेचन नहीं किया गया है।

**ख. पारिवारिक समस्या :-**

पारिवारिक समस्याओं के अंतर्गत उन समस्याओं का अंतर्भाव होता है जिनका परिणाम पूरे परिवार तथा परिवार के सदस्यों पर पड़ता है। ये समस्याएँ परिवार के सभी सदस्यों को प्रभावित करती हैं। नारी परिवार का एक अभिन्न अंग है। नारी के बिना पूरे परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती। नारी के सामने उपस्थित होनेवाली समस्याएँ पूरे परिवार के सदस्यों को प्रभावित करती हैं, जैसे- पति, बच्चे, सास-ससूर, देवर-ननद, माता-पिता, भाई-बहन आदि। मेरा विषय नारी की समस्याओं का परिवार के निर्दिष्ट घटकों पर क्या असर पड़ता है, इसका विवेचन करना नहीं है अपितु इन घटकों के कारण नारी को कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसका विवेचन करना है। अत: प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने उन्हीं समस्याओं का समावेश किया है जो नारी के व्यक्तित्त्व और उसके जीवन को प्रभावित करती हैं।

भारतीय संस्कृति पुरूष-प्रधान संस्कृति होने के कारण यहाँ नारी कितनी ही बड़ी विदुषी क्यों न हो उसे पुरूष की अपेक्षा गौण स्थान दिया जाता है। पुरूष को वंश चलानेवाले दीपक के रूप में देखा जाता है,अत: पुरूष तथा लड़के को सभी प्रकार की सुविधाएँ परिवारवालों से प्राप्त होती हैं। पुरूष की अपेक्षा नारी को बहुत ही कम महत्त्व दिया जाता है। उनकी परवरिश करना एक बोझ समझा जाता है। बचपन ही से नारी को हीन, दीन समझकर व पराया धन समझकर उसकी अच्छी परवरिश नहीं की जाती। इसी कारण नारी अपने-आप को एक असहाय, दीन, अबला समझने लगी है। इसी विचार के कारण ही नारी अपना विकास नहीं कर पा रही हैं। जो अपना विकास करना चाहती है, ऊँचा उठना चाहती है उनकी परिवार के लोग सहायता करने की अपेक्षा उसके प्रगति के मार्ग पर रूकावटे निर्माण करते हैं। इन्हीं समस्याओं के साथ नारी अद्योपांत झगड़ती रहती है।

नारी परिवार का एक हिस्सा है। जिस तरह मनुष्य समाज में ही रह सकता है अन्यत्र नहीं

उसी तरह नारी परिवार में ही रह सकती है। परिवार में रहते उसे सामाजिक सुरक्षा प्राप्त होती है। परंतु परिवार के लोगों के द्वारा भी उसपर अत्याचार, अन्याय किया जाता है। उसे हर वक्त नारी होने का, अबला होने का, पराधीन होने का एहसास दिलाया जाता है। उसे परिवार के सदस्यों द्वारा पीड़ित तथा प्रताड़ित किया जाता है। नारी के सामने परिवार को लेकर जो समस्याएँ उपस्थित होती हैं इसका विवेचन प्रस्तुत किया है। कहानियों के आधार पर पारिवारिक समस्याओं का निम्नांकित विभाजन किया है।

**1. पति-पत्नी में अनबन :-**

आधुनिक युग में नारी उच्च शिक्षा लेने लगी है और नौकरी करके आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने लगी है। शिक्षित नारी अपने पर होनेवाले अत्याचार चूपचाप नहीं सहती अत: पति-पत्नी के विचारों में वैचारिक भिन्नता आती है। पति-पत्नी में कलह जैसी स्थिति निर्माण होती है। पति की कोई बात पत्नी को पसंद नहीं आती तो वह उसका विरोध करने लगती है। इसी कारण पुरूष का मानभंग होता है। वह अपना स्वामित्व कायम रखने के लिए पत्नी पर अनेक प्रकार के अत्याचार करने लगता है। नारी में शिक्षा के कारण स्वत्व को पहचानने की शक्ति निर्माण हो चुकी है। पुरूषों के द्वारा किये जानेवाले किसी भी अन्याय का वह विरोध करने लगी है। रेणु गुप्ता के विचार में - ``किसी पुरूष की पत्नी, बहन, मां व प्रेमिका के अतिरिक्त अब नारी सहयोगी, सहपाठी व सहचरी रूप में भी उपस्थित हुई। अब नारी स्वावलंबी हो चुकी थी और अपने स्वत्व को पहचानने लगी थी। यही कारण है कि पति-पत्नी संबंध अपनी मिठास खोकर औपचारिक होने लगे।``[46] स्पष्ट है कि आर्थिक स्वाधीनता के कारण नारी सामाजिक बंधनों को तोड़ने का प्रयास करने लगी है। वह सही अर्थ में पुरूष की सहचरी बन रही है। उसका दासत्व स्वीकारना अब उसे मंजूर नहीं है।

कर्तारसिंह दुग्गल द्वारा लिखी कहानी `करवाँ चौथ` की नायिका गीतांजली नौकरी करती है। पति की तरह उसे भी दफ्तर जाना पड़ता है। वह चाहती है कि घरेलु कामकाज में पति उसकी मदद करें। परंतु पुरूषी अहंकार के कारण उसके पति उसकी मदद नहीं करते। वे सुबह की चाय के साथ अखबार की खबरे पढ़ते रहते हैं।गीतांजली के मना करने पर अखबार को छोड़कर कार्यालय की फाइलों की फोन पर चर्चा करने लगते हैं। पति की इस आदत से तंग आकर गीतांजली अपनी सहकर्मचारी सहेली से कहती हैं - ``मैं पूछती हूँ, दफ्तर के मामले घर के टेलिफोन पर क्यों सुलझाए जायें कितनी-कितनी देर एक के बाद दूसरी फाईल की चर्चा ये कमबख्त फाइलें तो मेरी सौतें होकर रह गई हैं।``[47] इस बात से

स्पष्ट होता है कि गीतांजली को पति का घर के फोन पर फाइलों की चर्चा करना पसंद नहीं है वह चाहती है कि पति अखबार पढ़ना छोड़कर, फाइलों की चर्चा बंद करके उसकी मदद करें। उनके दो बेटे हैं दोनों में से एक को पति तैयार करें। परंतु पति उसकी एक नहीं सुनतें। गीतांजली इसके बारे में सहेली से कहती है - ``मैंने उससे कहा, `मिया ! तुम्हें भी दफ्तर पहुँचना होता है और मुझे भी। तुम भी तनख्वाह पाते हो, मैं भी। मेरी तनख्वाह तुमसे चार पैसे कम ही सही। सुबह एक बच्चे को तुम तैयार कर दिया करो, दूसरे को मैं संभाल लूंगी।``[48] ऐसी बातों के साथ-साथ जब दोनों में नसबंदी को लेकर चर्चा होती है तो पति नसबंदी करवाने से डरते हैं और चाहते हैं कि गीतांजली ही नसबंदी करे। पति के इन विचारों के कारण गीताजंली को पति से नफरत होने लगती है। जैसे - ``अगर मरना हो तो तुम क्यों नहीं मरती। इस तरह का भी कोई मिया होगा। तोबा मुझे तो नफरत है ऐसे आदमी से !``[49] तात्पर्य यह की गीतांजली आज की आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है और अपने हक के लिए पति के साथ झगड़ती भी है। इसी कारण कभी-कभी पति की मार भी खाती है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि पति-पत्नी के विचारों में मेल न होने के कारण पति-पत्नी में अक्सर झगड़े होते हैं। पति अपने शारीरिक बल का प्रयोग करके पत्नी को पीटता है। अत: पति - पत्नी में अनबन जैसी समस्या का असर भी पुरूषों की अपेक्षा नारी वर्ग को ही जादा प्रभावित करता है।

## 2. पति द्वारा किए जानेवाले अत्याचार :-

पति अपनी धाक जमाने के उद्देश्य से हमेशा किसी भी मामूली कारणों को लेकर पत्नी की पीटाई करता है। उसके विचार से पत्नी एक भोग्या वस्तु तथा पैर की जूती ही है। वह उसे सभी पारिवारिक अधिकारों से वंचित रखता है। शादी कर आई औरत सबसे जादा प्रेम अपने पति से करती है। पति ही उसका सबकुछ होता है। परंतु पति ही उसे प्रताड़ित व अपमानित करें तो उसके मन में असहनीय यातनाएँ निर्माण होती हैं। राम आहूजा के अनुसार - ``एक स्त्री के लिए उस आदमी द्वारा पीटा जाना जिस पर वह सर्वाधिक विश्वास करती थी, एक छिन्न-भिन्न करनेवाला अनुभव होता है।``[50]

`सारिका` पत्रिका के अध्ययनार्थ चुने विशेषांक में चित्रित बहुत-सी कहानियों में पति द्वारा पीड़ित नारी का चित्रण किया है। जैसे- कर्तार सिंह दुग्गल की कहानी `करवां चौथ` की गीतांजली अपने हक को मांगने के कारण पति द्वारा पीटी जाती है। साथ ही उस पर चरित्र हीनता का आरोप भी लगाया जाता है। गीतांजली की तरह ही `उलझे संबंध` में आरिगपूडि द्वारा चित्रित नायिका अंबिका देवी

के पति उसके चरित्र पर मात्र इस कारण संदेह करते हैं कि उनके जेल जाने के बाद पीछे उनके बेटी शील का जन्म होता है। अपने पर हुए अत्याचार को बयान करती अंबिका देवी कहती है - ``दूसरी बार जेल गये तो शीला पैदा हुई। जेल से बाहर आये तो उनको शक रहा कि शीला उनकी लड़की नहीं है।``[51] अत: स्पष्ट है कि अंबिका देवी के पति उसे चरित्र हीन समझकर उसका त्याग करते हैं।

संतान अच्छी हो या बूरी नारी सभी को समानरूप से चाहती है। संतान द्वारा की गई हर गलती को वह माफ करती है। परंतु जब बूरे कर्म करनेवाली संतान के प्रति मां प्रेम दर्शाती है तो उसे पति के हाथो पीटा जाता है। तथा उस पर धिनौने आरोप लगाएँ जाते हैं। रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` की नायिका पिता और बहन के अत्याचारों से तंग आकर निम्न जाति के आदमी के साथ भाग जाती है। इस कारण वह पिता के रोष का कारण बनती है। पति द्वारा छोड़ी जाने पर उसके पिता उसे घर में नहीं आने देते। परंतु मां उसे चाहती है। ममता के हाथों मजबूर वह चोरी-छूपे उसे मिलती है। परंतु पिता को यह बात पसंद नहीं अत: वह नायिका की मां को पीटते हैं और साथ में उस पर आरोप लगाते हुए कहते हैं - ``हरामजादी, बेटी का मोह अभी नहीं छूटा। जैसी तू वैसी बेटी। घर का सामन चूरा-चूराकर उसके पास पहुँचाती है।``[52] इस प्रकार संतान के मोह के कारण भी नारी को पीड़ित तथा प्रताड़ित किया जाता है।

पति को अपनी सुंदर पत्नी की सुंदरता पर गर्व होता है। परंतु कई औरतों के लिए उनका सौंदर्य अभिशाप बन जाता है। उसकी जवानी और सुंदरता को लेकर पति हमेशा उसे शक की निगाहों से देखता है। कमलेश भारतीय की कहानी `एक सूरज मूखी की अधूरी परिक्रमा` में विक्की के पिता अपनी पत्नी पर संदेह करते हैं। इतना ही नहीं तो वे विक्की को अपनी संतान ही नहीं समझते। नाजायज समझते हैं। यहां शक का कारण विक्की की मां की न ढलनेवाली जवानी और खुबसूरती ही है। पति द्वारा शक करने का कारण पुछने पर विक्की की माँ कहती है - ``मेरी न ढ़लनेवाली खूबरसूरती, मेरी गोरी-चिट्टी देह!``[53] अत: स्पष्ट है कि जिस सौंदर्य के कारण नारी अपने पति के दिल पर राज करती है वही सौंदर्य पति की शक्की प्रवृत्ति के कारण अभिशाप बनता है। जिसके कारण नारी का जीवन उध्वस्त हो जाता है।

इस प्रकार विचारों में अलगाव, सुंदरता के कारण पति के द्वारा शक करना, पति द्वारा पीटना आदि समस्याओं से नारी घिर जाती है और उसका जीवन एक प्रकार से नारकीय यातनाओं से भर जाता है।

### 3. पति के अवैध यौन संबंध :-

भारतीय पत्नी जिस प्रकार अपने-आप को पति की संपत्ति समझती है। उसके साथ पतिव्रता धर्म का पालन करके एकनिष्ठ रहती है, उसी प्रकार वह भी चाहती है कि पत्नी के रूप में पति पर सिर्फ उसी का ही अधिकार हो। वह ये नहीं चाहती कि उसके होते हुए पति किसी और नारी से संबंध रखें। नारी की यह इच्छा कभी-कभी पूरी नहीं होती। जैसे-जैसे पत्नी से मन भर जाता है, पुरूष पराई नारी के प्रति आकर्षित होता है। कुछ पुरूषों के तो शादी के पहले से ही अनेक औरतों के साथ नाजायज संबंध होते है। और शादी के बाद भी कायम रहते हैं। कमलेश भारतीय की कहानी `एक सूरज मुखी की अधूरी परिक्रमा` में विक्की के पिता सुहागरात के दिन ही रखैल के पास जाने के बाद पत्नी के पास आते हैं। पति की आलोचना करते हुए विक्की की माँ कहती है - ``जिसकी माँ ने सुहागरात को देखा हो कि उसका आदमी किसी रखैल के यहाँ जाने के बाद उसके पास आया है -।``[54] इस बात से स्पष्ट है कि विक्की के पिता एक बदचलन किस्म के आदमी है जो सुहागरात के दिन भी किसी रखैल के साथ रात बिताने के बाद अपनी पत्नी के पास जाते हैं। घर में सुंदर पत्नी होते हुए भी विक्की के पिता की आदत नहीं छूटती। विक्की आत्महत्या करने के बाद भी उसके पिता के चाल-चलन में कोई फर्क नहीं पड़ता। विक्की की मां को जब पूछा जाता है कि बेटे की मौत के बाद पिता के चाल-चलन में बदल हुआ या नहीं, तो वह कहती है - ``न, बिल्कुल नहीं। वही रंग-ढ़ंग, वही कमाई।``[55]

बूटा सिंह की कहानी `तीन सतियाँ` में संपत्ति की नशा में चूर संतो का पति पैसे देकर बरवालों की लड़की मंदा के साथ संतो के सामने ही कमरे में घुसता है। संतो को अपमानित तथा प्रताड़ित करने के लिए संतो को ही दूध मांगता है। संतो अपने बेटे से कहती है - ``तेरा बाप मेरे सामने बरवालों की लड़की मंदा को लेकर अंदर चला जाता था और थोड़ी देर बाद बाहर निकल कर कहता, `संतो, हमारे वास्ते दूध गरम कर ला।``[56] इस प्रकार संतो को प्रताड़ित करने के बाद भी पति का जी नहीं भरता वह हर दम संतो को पीडित करने के लिए तत्पर रहता है। संतो मांस-मच्छी नहीं खती तो पति जबरदस्ती उसके मुँह में मांस के तुकड़े ठूंसता था। वह कहती है - ``तेरा बाप चंड़ाल मेरे हाथों से माला छीन कर मेरी छाती चढ़ बैठता और मेरे मुँह में भुने हुए मांस के टुकड़े ठूंस देता।``[57]

मधु किश्वर की कहानी `बीस या पच्चीस` की भगवती के पति को अपने घर में खाने के लिए ठीक रोटी नहीं मिलती फिर भी ``एक रखैल रखे बैठा था। कभी पूरा हप्ता गायब, कभी हर रात। जो

कभी थोड़ी बहुत कमाई की, वो भी उस औरत को चढ़ावा चढ़ा आता।``[58] इस बात से स्पष्ट है कि परिवार का सारा खर्चा भगवती को ही उठाना पड़ता है। दूसरों के यहाँ घरेलू काम करके वह बेटे और अन्य परिवार के सदस्यों का पेट पालती है। इतना करने पर भी पति की पीड़ा उसे सहनी ही पड़ती है। शराब के नसे में चूर पति उसे पीटता रहता है और सास व ननद की उपस्थिति में ही उसके साथ जबरदस्ती संभोग करता है। इस प्रकार पति के अवैध संबंध के कारण नारी को अनेक सनस्याओं का सामना करना पड़ता है।

### 4. पति की व्यसनाधीनता :-

पति के व्यसनों के कारण भी पत्नी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे मधु किश्वर की कहानी `बीस या पच्चीस` की भगवती का पति शराब तथा औरतबाजी के कारण अपनी कमाई का पैसा घर में नहीं देता अत: परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी भगवती को ही संभालनी पड़ती है। उसपर अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ पति, सास और ननद की परवरिश का भी बोझ है। भगवती दिन-रात मेहनत करके इस बोझ को ढ़ोते जा रही है। यही समस्या श्याम निर्मम की कहानी `सांप सीढ़ी` की परबतिया के सामने भी है। उसका पति दिन भर घुमते-घुमते थक जाता है। थकान मिटाने का पति नकारा हो जाता है। घर-परिवार का सारा काम-काज परबतिया ही देखती है। पति घर में कुछ लाने की बजाय घर के ही पैसे उड़ाता है। पति की व्यसनाधीनता से तंग आकर परबतिया कहती है - ``हम तो तंग आ गिये हैंगे इस मरे के पीने से। पता नी कैसे-कैसे जान आ जावै रोजीना संराक पीने की। जनै कैसे रोग लगा लिया ? संराफ पी लेवे और गाली दियो जावैगा।``[59] इस बात से स्पष्ट है कि व्यसनाधीन पति के कारण पत्नी को घर की सारी जिम्मेदारियाँ संभालनी पड़ती है। घर का सभी घरेलू कामकाज करने के बाद उसे मेहनत-मजदूरी भी करनी पड़ती है। बाहर से थकी हारी नारी चाहती है कि पति उसकी सराहना करें प्यार की बातें करे। ऐसा करने पर उसकी सारी थकान दूर हो जाती है। परंतु परबतिया का पति गालियाँ देता है। उसके मैके की आलोचना करता है। इस प्रकार शराबी पति के कारण पत्नी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

### 5. परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा पीड़ित होना :-

नारी पर अत्याचार करने में बहुतांशी नारी का ही हाथ रहता है। घर की सास, ननद,जेठानी आदि औरतें बहु के रूप में आई नई नारी को पीड़ित करती रहती हैं। बूटा सिंह की लिखी `तीन सतियाँ ` कहानी में संतो की सास बेटे की अय्याशी की पैखी करके संतो को पीड़ित करती है। संतो

का पति संतो के सामने ही नौकरों की बेटी को लेकर कमरे में बंद होता है। परंतु संतो की सास उसका विरोध करने की बजाय उसको प्रोत्साहित करती है। जैसे - ``यह तो खानदानी लड़कों के मौज मेले होते हैं, जिस औरत पर मन आ जाये उसे काबू कर लें !``[60] सास के इस व्यवहार के कारण ही संतो आहत होती है। उसे सबसे जादा पीड़ा तो तब होती थी जब उसका पति नंदा के साथ मस्ती करके थक-हारकर बाहर निकलता और उसकी सास उसे आदेश देती - ``जा री संतो, रसाई में जाके दूध गरम कर, लडका मुझे पकड़ा दे।``[61] इस बात से स्पष्ट है कि घर की मालकिन संतो को पति की रखैल की नौकरानी बनना पड़ता है। इतनी पीड़ा देने के बावजूद संतो की सास का जी नहीं भरता तो वह संतो के मैके वालों की आलोचना करती है। कभी-कभार संतो को मिलने मैके के लोग आते हैं तो उनका अपमान करके प्रताड़ित करती है। इन सभी अत्याचारों को सहते संतो चूपचाप अपना जीवन बिताती है।

सत्यपाल सक्सेना की कहानी `अंधेरे के विरूद्ध`की नायिका वसुधा को उसकी ननद क्षमा अपनी मां के साथ मिलकर वसुधा पर अत्याचार करती है। पहली बार जब क्षमा मैके आती है तो पुरियाँ खाने से इन्कार करती है। इस बात को ध्यान में रखकर वसुधा दूसरी बार ननद के सामने कच्चा खाना परोसती है। इसी बात को लेकर क्षमा मां से शिकायत करती है - ``देख लो अम्मा। बहू से इतना भी न हुआ कि शगुन की ही सही, दो पूरियाँ तो थाली में रख देती, मैं कौन-सा रोज-रोज आती हूँ, जो सूखी रोटी सरका दीं।``[62] यह बात शाम को वसुधा के पति को बताई जाती है और पति वसुधा को पीटते हैं। वसुधा बेचारी चूपचाप सभी अत्याचारों को सहती रहती है। वसुधा की सास और ननद को वसुधा को पीड़ित करने में आनंद मिलता है। वे चाहती है कि वसुधा को इसी तरह पति पीटता रहे।

वसुधा के मैके से कोई लेने या मिलने आता तो वसुधा की सास उन्हें भी प्रताड़ित करती है, अपमानित करती है। उनके सामने ही वसुधा की आलोचना करती है। इन अत्याचारों से तंग आकर जब कभी वसुधा मैके जाने की इच्छा व्यक्त करती तो सास भेजने से इन्कार करती हुई कहती है - ``बाप के घर में छब्बीस साल रहकर भी पेट नहीं भरा जो रोज-रोज मायके जाने की लगी रहती है ! मायके से इतना ही लगाव था तो रह जाती वही पर --क्यों शादी की ?``[63] इतना ही नहीं जब वसुधा मन बहलाने के लिए पास-पड़ोस की औरतों के यहाँ जाती है तो, सास और पति उसका विरोध करते हैं। एक बार वह पड़ोस की दीदी के पास स्वेटर की बुनाई सीखने जाती है तो सास बेटे से उसकी शिकायत करती है और बेटा उसे लंछित करता है। उसके चरित्र को लेकर उसे प्रताड़ित करता हुआ कहता है -``स्वेटर के बिना जान निकल

रही थी क्या? क्यों गयी थी उसके घर ? ये सब जानते हुए भी वहाँ हर दम शराबी-कवाबी, आवारा लोग बैठते हैं --- मुझे तो पहले ही पता था कि तू एक जगह टीकनेवाली औरत नहीं है।``[64] इन सब अत्याचारों से तंग आकर वसुधा आर्थिक दृष्टि से स्वयंपूर्ण बनना चाहती है नौकरी करना चाहती है परंतु पति और सास दोनों भी उसका विरोध करते हैं।

घर की बहुओं को सताने में औरत को बड़ा ही गर्व महसूस होता है। वे चाहती हैं कि हर वक्त बहु पर रौब जमाए। बहु उसके आगे-पीछे घुमती रहें। कुछ ससुर भी बहु को सताने में पीछे नहीं रहते। बेटी समान बहु को प्रताड़ित तो करते ही हैं परंतु सत्यारानी के ससुर की तरह ऐसे भी ससुर होते हैं जो अपनी ही बहु के साथ जोर-जबरदस्ती करते हैं और अपनी वासना तृप्त करते हैं। बहु के इन्कार करने पर उन्हें धमकाते हैं। जैसे-``सत्तो की बच्ची, ज्यादा तिड-तिड की तो गली का तिनका बना के फेंक दूंगा। मांगती कोई भीख नहीं डालेगा ---।``[65]

उस तरह के अत्याचारों से तंग आकर नारी या तो आत्महत्या करती है या घुट-घुट कर जीती है अथवा फिर भोला की तरह बगावत करती है। अत्याचारी को मिटाने के साथ-साथ खुद को भी मिटाने का विचार करती है। कोई निराशावादी नारी इस स्थिति से लड़ने की शक्ति नहीं जुटा पाती अत: संतो की तरह बस यही सोचती रहती है - ``इस सुहाग और हवेलियों से तो रंड़पा और उजाड़ ही अच्छे!``[66]

तात्पर्य यह कि आधुनिक युग में जब कि नारी हर क्षेत्र में पुरूष की तरह अपना योगदान देने लगी है, फिर भी उसे परिवार में पीड़ित- प्रताड़ित, आहत तथा लांछित किया जाता है और इन सभी बातों में औरतों की ही सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। अत: नारी ही नारी के सामने अनंत समस्याएँ खड़ी करती है।

### 6. व्यसनाधीन माता-पिता :-

माता-पिता का कर्तव्य होता है कि वे संतान की परवरिश अच्छी तरह से करें, उसे अच्छी तालिम देकर इस काबिल बनाएँ कि वह आगे चलकर खुद अपने पैरों पर खड़ी रह सकें, अपनी उन्नति कर सकें। कुछ माता-पिता तो अपना यह कर्तव्य समझकर बच्चों को जीने के काबिल बनाते हैं। खुद हर तरह की समस्याओं का सामना करते हैं परंतु अपनी संतान पर कोई आँच नहीं आने देते। परंतु कुछ माता-पिता

अपने कर्तव्य का पालन करने में असफल होते हैं। जिसका कारण या तो उनकी निर्धनता या फिर व्यसनाधीनता हो सकता है। व्यसनाधीन और निर्धन माता-पिता नशे की हालत में अपनी संतान पर अत्याचार करते रहते हैं। ऐसे परिवार में लड़की बोझ समझी जाती है। अत: माता-पिता द्वारा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों पर ही अधिक अत्याचार किए जाते हैं। इन अत्याचारों की भयानक स्थिति का वर्णन करते हुए आरिगपूडि कहते हैं - ``मेरे मित्र ने मुझे बताया था कि उस संस्था में जो उपचार केंद्र होने के अलावा, एक पुनर्वसन केंद्र भी था, एक सौ पचास से भी अधिक ऐसी बच्चियाँ और किशोरियाँ रहती हैं, जो अपने माता-पिता के अत्याचारों के कारण उस संस्था में आई है, और जिन्हें मानसरोग- विशेषज्ञ के उपचार की जररूत है।``[67] तात्पर्य यह कि माता-पिता द्वारा बच्चों पर किए जानेवाले अत्याचार इतने भयानक होते हैं कि बच्चे मानसरोग से पीड़ित होते हैं। और इनमें लड़कियों की ही संख्या अधिक होती है।

माता-पिता व्यसनाधीन व निर्धन हो तो बेटी पर नशे में अनंत अत्याचार करते हैं। रिचर्ड द अंब्रेसियो की कहानी `बेकसी के आगे` में नायिका के माता-पिता शराबी है, शराब के नशे में धूत होकर उसे मारते हैं - पीटते हैं। उसकी परवरिश करने में अपने-आप को असमर्थ समझते हैं। अपने-आप पर उसका बोझ समझते हैं। इसी कारण उसके माता-पिता एक चकला चलानेवाली औरत के हाथों उसे बेच देते हैं। लड़की चकले वाली के साथ जाने से इन्कार करती है तो क्रोध में उसके माता-पिता गर्म तवे पर ढकेल देते हैं। वे उसे मार ही डालते परंतु पड़ोसी आकर लड़की को बचाते हैं और इस संस्था में दाखिल करते हैं। यह लड़की माता-पिता के अत्याचारों से इतनी भयभीत हो चूकी है कि मानसरोग का शिकार बन जाती है। लेखक जब उसे मिलने जाते हैं तो पाते हैं - ``जब से उसका जन्म हुआ था, तब से उसने आतंक और यातनाओं के अलावा, और कुछ नहीं जाना था, माता-पिता का या अन्य किसी का प्रेम क्या होता है, यह उसने कभी अनुभव नहीं किया था।``[69] इस बात से स्पष्ट होता है कि नायिका के बचपन से ही माता-पिता द्वारा दी जानेवाली पीड़ा को सहना पड़ता है। अत: उसे प्रेम क्या होता है इसका पता ही नहीं चलता। निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि व्यसनाधीन माता-पिता भी समस्या के रूप में नारी के सामने खड़े होते हैं।

**7. स्वास्थ्य संबंधी :-**

बीमार होना नारी की अपने-आप में एक समस्या है। नारी के बीमार होने पर पुरूषों की तरह उसे वैद्यकीय सुविधाएँ नही दी जाती। उसे अपने हाल पर छोड़ दिया जाता है। बूटासिंह की कहानी `तीन सतियाँ` की सत्तोरानी जब बीमार पड़ जाती है, तो उसे परिवार के सदस्यों से अलग किया जाता है।

उसकी चारपाई तीसरी मंजिल पर बरसाती में रखवा दी जाती है। और परिवार के सदस्यों को हिदायत दी जाती है कि ``अरे, रानी के नजदीक कोई न जाना उसे अधरंग हो गया है।``[69] तात्पर्य यह कि उसे परिवार के सदस्यों से मिलने नहीं दिया जाता। वह खुद चल फिर सकती है परंतु उसे कोई नीचे उतरने नहीं देता। उसके अपने बच्चे और पति भी उससे मिलने नहीं जाते। नासिरा शर्मा की कहानी `दस्तक` की शबाना अपने पति काजिम के वियोग में मर जाती है। यू तो उसे दवा-दारु की कमी नहीं की जाती परंतु उसकी असली दवा काजिम है, फिर भी उसे काजिम से मिलने नहीं दिया जाता। अतं में घर-परिवार की झूठी शान के कारण उसकी मृत्यु होती है।

वर्तमान युग में औद्योगिक प्रगति हुई है परंतु आज भी अनेक देहातों में वैद्यकीय सुविधा उपलब्ध नहीं है, अत: नारी के बीमार पड़ जाने पर वैद्यकीय सुविधा उपलब्ध नहीं होती। बिना इलाज ही के उसकी मृत्यु हो जाती है। विजय किशोर मानव की `प्रलय` कहानी की लक्ष्मी वैद्यकीय सुविधा के अभाव में मर जाती है। लक्ष्मी का पति रमेश इलाज के लिए उसे शहर ले जाना चाहता है। परंतु जब वह ढ़ाई हजार रूपये मांगने के लिए अपने पिता के पास जाता है, तो उसके पिता कहते हैं - ``रमेसवा तुम्हारा दिमाग तो नाइं फिरि गा है, हमरे हियन का रूपया फरत है, जो हला देबे, इत्ते मा तो ---दूसरी मेहरिया बिआह लइहै।``[70] तात्पर्य यह कि पैसे के सामने नारी को कोई मूल्य नहीं समझा जाता। अगर एक की मृत्यु होती है तो दूसरी पत्नी के रूप में लाई जाती है। उसकी न कोई खाने की खबर लेते हैं और न ही उसका हालचाल पुछने कोई आता है। इस प्रकार बीमार होना भी नारी के सामने एक समस्या ही है।

### 8. तीसरा आदमी :-

पति-पत्नी की गलतियों के कारण उनके बीच कोई तीसरा आदमी प्रवेश करता है। आगे चलकर वही आदमी नारी की समस्या बन जाता है। नफीस अफरिदी की कहानी `दौड़` में पति भीमा काछी और पत्नी जोगना के बीच तीसरे आदमी के रूप में मालवा छीपे प्रवेश करता है। भीमा काछी जोगना को माँ बनाने में असमर्थ है। वह अपने वंश के लिए वारिश की आवश्यकता जानकर संतती उत्पत्ति के हेतु मालवा छीपे को पत्नी के पास भेजता है। छीपे की बदौलत जोगना माँ बन जाती है। माँ बनने के उपरांत जोगना मालवा को अपना बदन तक छुने नहीं देती। इसी कारण मालवा छीपे उसे समाज में बदनाम करने की धमकी देता है। सरसू पर भी अपना हक जमाता है। जैसे ``सरसू के जन्म पर वह एक अजिब तरह की गुदगुदाहट से भर गया था। चिट्टा रंग और चकोट चेहरा देखते ही अधिकार भावना से भर उठा।``[71] इन

परिस्थितियों से समझौता करने के उद्देश्य से जोगना छीपे की हर बात मान लेती है। छीपे हर दिन उसका लैंगिंक शोषण करता है। जोगना में आये इस परिवर्तन के कारण भीमा परेशान हो जाता है। इस परेशानी का कारण बच्चा है अत: वह उसे मारने की कोशिश करता है। वह बच्चे को लेकर दूर चला जाता है। जोगना बच्चे के प्रति अपनी ममता के कारण भीमा काछी को ढूँढने के लिए मारी-मारी फिरती है।

मालवा छीपे जोगना को अपनी पत्नी ही समझता है। वह पत्नी की तरह ही उसके साथ व्यवहार करता है। वह जब भी जी में आए जोगना के साथ संभोग का आनंद प्राप्त करता है। बदनामी के डर से जोगना उसकी हर बात चूपचाप मान लेती है। अत: स्पष्ट है कि इस प्रकार के आदमी के कारण पति-पत्नी के बीच आने पर भी नारी के सामने नैतिक समस्या व मानसिक तनाव की समस्या निर्माण होती है।

उपरोक्त पारिवारिक समस्याओं का विवरण करने के बाद हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि भले ही नारी अपनी योग्यता सिद्ध करके पुरूषों की बराबरी करने लगी हो, भले ही वह शिक्षित तथा आर्थिक दृष्टि से स्वयंपूर्ण हो परंतु आज भी परिवार में उसे कोई सम्मानित स्थान प्राप्त नहीं है। वह आज भी पुरूषों की दासी के रूप में ही अपना जीवन-यापन कर रही है।

**ग. आर्थिक समस्या :-**

आधुनिक युग में शिक्षा-दीक्षा के कारण नारी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने लगी हैं। परंतु अधिकांश औरतें आर्थिक दृष्टि से अपने पति व परिवार के अन्य पुरूष सदस्यों पर ही निर्भर होती है। पति द्वारा दिए जानेवाले सीमित धनराशि में ही उन्हें परिवार की तमाम जरूरतें पूर्ण करनी पड़ती हैं। परिवार की जरूरतों को पूर्ण करते-करते नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। मधू किश्वर की कहानी `बीस या पच्चीस` की नायिका मित्रा के पति घर के खर्चे के लिए उसे 1500 रूपये हर महीना देते हैं। उन पैसों से मित्रा को पूरे परिवार का खर्चा एक महीने तक चलाना पड़ता है। इतनी-सी सीमित धनराशि में परिवार की जरूरतों को पूरा करने में जो समस्याएँ आती हैं, बताते हुए मित्रा कहती है, ``1500 रूपये कब आये और कब गये पता ही नहीं चलता। 650 रूपये मकान का किराया, 250 रूपये महीना बच्चों की फीस, बाकी बचे 600, उसमें पूरा महीने का राशन, दूध, सब्जी, बिजली, पानी का बिल और घर की अनगिनत रोजमर्रा की जरूरतें -साबून, तेल, टूथपेस्ट।``[72]

निम्न परिवार की नारी तो मजदूरी करके परिवार का खर्चा चलाती है। उनके पति की मदद उन्हें प्राप्त नहीं होती, उल्टा पति ही पत्नी पर निर्भर रहता है। प्रस्तुत कहानी की भगवती लोगों के घरों में बर्तन मांजने का काम करके परिवार को चलाती है। जब कभी काम देनेवाले परिवारों में से एकाध परिवार कम हो जाता है तो उसके सामने अपने परिवार को खाना खिलाने तक की समस्या खड़ी रहती है। ऐसे ही एक परिवार का काम छुटने पर परेशान भगवती को दूसरे घर काम की तलाश करने की सलाह देती है तो भगवती कहती है - ``कहां इतनी जल्दी मिल जाता है ? 15-20 दिन तो लग ही जायेंगे --- महीना भी लग सकता है। कैसे खर्चा पूरा करुंगी।``[73] अत: स्पष्ट है कि काम छूटने के कारण भगवती के सामने भूख की समस्या खड़ी हो जाती है।

आर्थिक विपन्नता के कारण अपने पति की नौकरी स्थायी रूप में रखने के लिए पत्नी को अपने शील की बलि देनी पड़ती है। `फूलो का कुर्ता` कहानी में अपने बच्चों की भूख के कारण सूखे चेहरों को देखकर शेठ के हाथो अपने शील को बेचनेवाली नारी का जिक्र किया है। पति को नौकरी दिलवाने के लिए वह शेठ का बिस्तर गर्म करती है। इसी कारण परिवार में खूशी के दिन आते हैं। भेद खुलने पर नवयुवक पति को पता चलता है - ``खुशहाली का मोल उसकी अपनी योग्यता नहीं उसकी पत्नी की इज्जत थी।``[74] अत: स्पष्ट है कि अर्थाभाव की समस्या का समाधान करने के लिए नारी को इज्जत तक बेचनी पड़ती है।

माता-पिता निर्धन होने के कारण युवतियों के सामने अविवाहित व अनमेल विवाह की समस्या उभर आती है। रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` की नायिका के पिता के पास शादी कराने के लिए पर्याप्त मात्रा में धन नहीं है अत: धन कमाने की धून में वह अपनी दोनों बेटियों और पत्नी से जानवर की तरह काम करवाता है। बेटियों की शादी के बारे में धन के अभाव के कारण सोचता तक नहीं। वह धन पास आने के उपरांत शादी करना चाहता है परंतु बेटियाँ शादी की उमर को पार कर चूकी है। जैसे - ``बाप को खाली पैसे चाहिए बेटी की शादी की चिंता ही नहीं। अब जब पैसे हो गए तो बापजान को बेटी की शादी की चिंता हुई है। अब यह बुढ़िया अच्छे कपड़े और गहने पहनकर घुमती है। कई लोग आए और मुँह बिचकाकर चले गए।``[75] तात्पर्य यह कि पैसे के अभाव में माता-पिता अपनी बेटियों की शादी नहीं करा सकते हैं अत: उनके सामने कुँआरी जिंदगी गुजारने की समस्या प्रस्तुत होती है। इसी स्थिति का वर्णन रमेश आनंद ने `नियंत्रण` कहानी में किया है। कहानी की नायिका आदर्श के पिता गिरधारीलाल

स्कुल मास्टर है। अपनी सीमित आय के कारण दान-दहेज देने में असमर्थ है। वे आदर्श के लिए अनुरूप वर की तलाश नहीं कर सकते और किसी अधेड़ या विधूर से आदर्श शादी नहीं करना चाहती। तंग आकर वह आजीवन शादी ही न करने का निर्णय लेती है।

जवान लड़की माता-पिता पर एक बोझ-सी होती है। वे चाहते हैं कि बेटी की जल्द-से-जल्द शादी करवा कर इस बोझ से छुटकारा पा ले। निर्धनता के कारण योग्य वर नहीं मिलता अत: माता-पिता किसी भी पुरूष के साथ अपनी बेटी की शादी रचाते है।आरिगपूडि की कहानी `उलझे संबंध` में निर्धन पुजारी अपनी बेटी अंबिका की शादी अधेड़ आदमी के साथ करवाते हैं। अपने पिता की आर्थिक दशा का वर्णन करते हुए अंबिका देवी कहती है - ``पच्चीस वर्ष मां-बाप के लिए बोझ बनी रही। गरीबी ऐसे कि दिन काटे नहीं कटते थे। पुजारी पिता क्या खायेगा क्या खिलाएगा।``[76] हमदि जबीं की `गुनाहगार` कहानी की रमेशा के माता-पिता निर्धनता के कारण उसकी शादी साठ.साल के हाजी साहब से करवाते हैं। इसी प्रकार इस्मत चुगताई की कहानी `लिहाफ` की नायिका बेगमजान की शादी उसके माता-पिता अधेड़ नवाब साहब से करवाते हैं और इसीलिए करवाते हैं कि नवाब साहब खुद हज कर चुके हैं। उनके यहाँ कोई वेश्या या बाजारु औरत नहीं आती। जैसे - ``यह वह बेगमजान थी, जिनके गरीब माँ-बाप ने नवाब साहब को इसीलिए अपना दामाद बना लिया था --- ।``[77]

आर्थिक विपन्नता के कारण `प्रलय` की लक्ष्मी की तरह कुछ औरतों को वैद्यकीय सुविधा भी उपलब्ध नहीं होती। वे बीमारी के कारण बीना इलाज के ही मर जाती हैं। कुछ औरतें पढ़ी लिखी होती हैं और चाहती है कि नौकरी करे ताकि आर्थिक दृष्टि से उन्हें पति पर निर्भर रहना न पड़े। परंतु परिवारवाले व पति उसे नौकरी करने की अनुमति नहीं देते। `अंधेरे के विरूद्ध` कहानी की वसुधा को पति और सास नौकरी करने की अनुमति नहीं देते।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि पति और माँ-बाप की निर्धनता के कारण नारी को अनेक कठिन से कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

**घ. व्यक्तिगत समस्या :-**

सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं के साथ-साथ नारी को अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के साथ भी जूझना पड़ता है। व्यक्तिगत समस्याओं में शारीरिक विकलांगता, निर्धनता, अशिक्षा, काम-

तृप्ति, अकेलापन आदि समस्याओं का समावेश होता है। इन समस्याओं के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए राम आहुजा ने लिखा है - ``व्यक्तिगत समस्या वह है जो एक व्यक्ति या एक समूह को प्रभावित करती है।``[78] `सारिका` पत्रिकाओं में अध्ययनार्थ चूनी कहानियों में निम्नलिखित व्यक्तिगत समस्याओं का चित्रण हुआ है-

**1. अकेलापन :-**

मनुष्य समाज प्रिय प्राणी है, वह समाज में रहकर ही अपना जीवनयापन करता है। परिवार के सदस्यों के साथ सुख-दु:ख आपस में बाँटकर अपने जीवन की समस्याओं का सामना करता है। अकेले जीवन व्यतीत करना उसके लिए बहुत ही कठिन कर्म है। नारी को भी समाज में रहते किसी-न-किसी पुरूष अथवा नारी के सहारे की आवश्यकता होती है। अकेली नारी को समाज में रहनेवाले असामाजिक तत्त्व जीने नहीं देते। हरमन चौहान की कहानी `छाग` की गलकू माँ की मृत्यु के बाद अकेली हो जाती है। उसको किसी का भी सहारा नहीं है अत: अकेली गलकू को समाज के ठेकेदार सताते हैं। औरत का अकेला रहना कितना कठिन है इस बात को स्पष्ट करते हुए एक बुढ़ा आदमी कहता है - ``औरत और गाय खूंटे पर बंधी हुई ही अच्छी लगती है। जिसका कोई धनी (मालिक) नहीं होता, वह या तो भटक जाती है या फिर लोग भटकाते हैं। ``[79] अत: स्पष्ट है कि अकेली औरत समाज में रहते हर जगह से पीड़ित, प्रताड़ित होती है। समाज में रहनेवाले हवस के भेडिए उसकी इज्जत लूटते हैं। गलकू भी असहाय हो जाती है। तो समाज के ठेकेदार उसे खूनी और रंडी साबित करके कानून के हवाले कर देते हैं। `आधी उम्र की पूरी औरत` कहानी की सुदामा पति के मरने के बाद अकेली रह जाती है। साथ में छोटी बेटी की परवरिश का भी बोझ है। अकेली सुदामा को उसके देवर पति की जायदाद से बेदखल करने का प्रयास करते हैं। उसे पति बहोरन की रखैल साबित करके पेंशन पर अपना हक़ जताते हैं। अपनी व बेटी की सुरक्षा के हेतु सुदामा नाबालिग परसादी का हाथ रामप्रसाद के हाथ में देती है। गांववाले यहाँ भी उसका विरोध करके उस पर शारदा एक्ट लगाने की सलाह उसके देवरों को देते हैं। जैसे - ``कुछ लोग उसके देवर वगैरह पर यह दबाव भी ड़ाल रहे हैं कि `शारदा एक्ट` चलाओ ? ``[80]इस प्रकार अकेली नारी को समाज तो समाज उसके अपने संबंधी भी पीड़ित व प्रताड़ित करते हैं।

**2. नारी की बदसूरती :-**

नारी का बदसूरत होना भी उसके सामने समस्या खड़ी करता है। विशेष रूप से शादी-

ब्याह के मामले में ये समस्या सामने आती है। ऐसी युवती के साथ शादी करना तो दूर उनकी तरफ देखना भी कोई पसंद नहीं करता। रामदरश मिश्रद्‌वारा लिखी कहानी की नायिका बदसूरत है। उसकी जवानी उसे स्वस्थ बैठने नहीं देती। अन्य लड़कियों की तरह उसके मन में भी पुरूषों के प्रति चाहत निर्माण होती है। जब रास्ते पर आते-जाते लोगों की ओर देखकर वह मुस्कराती है तो लोग घबराकर भाग जाते हैं या फिर नफरत से उसकी ओर देखकर थूंक देते हैं। जैसे - ``शायद उसके चेहरे पर एक मुस्कान खिंची होती, लेकिन जब कोई उसे यों हँसते देखता तो घबराकर आगे बढ़ जाता या नफरत से थूक देता।``[81] इस तरह जवानी में लड़कियाँ चाहती है कि उनकी तरफ कोई मर्द प्यार से देखे, उनसे प्यार करे परंतु उनकी बदसूरती उनके सामने समस्या बनकर खड़ी होती है।

### 3. नामर्द पति :-

कुछ औरतों के पति उन्हें संतुष्ट करने में असमर्थ होते हैं। ऐसी नारी के सामने नामर्द पति की समस्या उपस्थित होती है। पति की नामर्दानी के कारण नारी मां नहीं बन सकती परंतु परिवार के सदस्य तथा समाज पुरूष को दोष देने की बजाय नारी को ही दोषी ठहराता है। नफीस अफरीदी की कहानी `दौड` की जोगना को पति भीमा काछी संतुष्ट करने में सफल नहीं होता। परंतु जोगना को ही दोषी मानकर अपनी खिज मिटाने के लिए उसे पीटता रहता है। जैसे - ``नसों में सरसराहट होती ही फिर बाघ बनकर झपटता। शिकार बेखरोच पड़े रहता। तिलमिलाकर वह झनझनी की कामड़ी उठा लेता और उसे बेतहाशा सूड़ने लगता। वह रोती- चीखती और लोट-लोट जाती।``[82] तात्पर्य, नामर्द पति का होना भी नारी के सामने एक समस्या ही हैं।

### 4. काम-तृप्ति की समस्या :-

यौनावस्था को प्राप्त करने के बाद मनुष्य प्राणी को अन्न और जल की तरह सेक्स की जरूरत महसूस होती है। शरीर की इस जरूरत को पूरा करने के लिए मनुष्य हर दम प्रयास करता रहता है। यह जरूरत पुरुष की तरह नारी को भी महसूस होती है। पुरूष अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए अनैतिक मार्ग को अपनाता है। नारी को इन मार्गों को अपनाना इतना सरल नहीं होता। वह अपनी कामेच्छा पूर्ण करने के लिए समलिंगी संभोग का सहारा लेती है और अपनी समस्या का समाधान करने का प्रयास करती है। इस्मत चुगताई की कहानी `लिहाफ` की नायिका बेगमाजन अपनी काम-वासना शांत करने के लिए नौकरानी रब्बू का सहारा लेती है। इसी तरह मंटो की कहानी `धुंवा` में कलसूम अपने भाई से बदन

तुड़वाकर तृप्ति का एहसास करती है। अकेले में सहेली विमला के साथ मस्ती भी करती है। जैसे - ``मसऊद ने देखा था कि विमला की चोली के बटन खुले हुए थे और कलसूम उसके वक्ष को छू रही थी।``[83]

काम-तृप्ति को शांत करने के लिए नारी को कई बार समाज के बंधनों को तोड़कर तृप्ति का मार्ग खोजना पड़ता है। रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` की नायिका काम-ज्वर से पीड़ित होकर निम्न जाति के आदमी के साथ भाग जाती है। उसके साथ शादी भी करती है। उलझे संबंध की नायिका अंबिका देवी तो अपने दामाद के साथ ही संबंध रखती है। लोगों में चर्चा होती है तो बेटी शीला के कहने पर सिंगापुर भाग आती है। इस बात का उसे पश्चाताप होता है तो मन हलका करने के लिए पति की तस्वीर के सामने वह कहती है - ``जो आपके रहते नहीं किया अब कर रही हूँ। और आपकी लड़की के कहने पर कर रही हूँ।``[84]

हमीद जबी की कहानी की रेशम बुढ़े पति हाजी से संतुष्ठ नहीं होती। अपने सौतेले बेटे के साथ नाजायज संबंध रखती है। उसी के साथ समागम करके अपनी यौन पीपासा को शांत करती है। जैसे - ``अंदर जाते-जाते मेहंदी के बाढ़ के पास ही उन्हें किसी की हंसी सुनाई दी - फिर चुड़ियों की खनक ! ----- फिर कपड़ों की सरसराहट ---।``[85] हाजी साहब के घर में पराए मर्द का प्रवेश तो नहीं होता अत: स्पष्ट है कि रेशम सौतेले बेटे के साथ ही मस्ती करती है। जो नारी लोक-लाज के कारण किसी पराए मर्द के साथ संबंध नहीं रखती और ना ही समलिंगी संभोग करने की सुविधा होती है, ऐसी नारी स्वप्न के माध्यम से काम-तृप्ति का एहसास करती है। जगवीर सिंह वर्मा की कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` की सुदामा मरे हुए पति को सपने में देखकर उसके साथ सोने की कामना करती है। जैसे - ``सुदामा चाहती है, उसे खूब गहरी नींद आये, सपने में बहोरन दिखे, उससे सुख-दु:ख की बातें करे, प्यार करे, उसके ढिंग सोये।``[86] इस बात से स्पष्ट है कि काम-वासना से पीड़ित सुदामा पति के सपने में आने की कामना करती है।

तात्पर्य यह कि नारी के सामने प्रस्तुत अनेक समस्याओं में काम-तृप्ति की समस्या भी है, जो नारी को काम ज्वर से पीडित करती है और उसे पूरा करने के लिए नारी छटपटाती रहती है।

**निष्कर्ष :-**

नारी के सामने प्रस्तुत होनेवाली समस्याओं का विवेचन करने के उपरांत हम कह सकते हैं कि वर्तमान युग में नारी अपनी हिम्मत, मेहनत व बुद्धि के बल पर पुरूषों की बराबरी में आने लगी है, नौकरी करके परिवार को चलाने लगी है। अपना व्यक्तिगत विकास करने में वह पूरी तरह सक्षम है। फिर भी अहंकारी पुरूषों ने नारी को पूर्ण रूप से स्वाधीनता नहीं दी है। अत: पराधीनता नारी के सामने उभरनेवाली प्रथम समस्या है।

भारतीय समाज में नारी को गौण स्थान पर रखा गया है। पुरूष अपना स्थान एवं स्वामित्व कायम रखने के लिए अपने शारीरिक बल का प्रयोग करके नारी पर अनगिनत अत्याचार करता है। उसे `अबला` समझकर उसके साथ बलात्कार करता है। नौकरी करनेवाली नारी का व्यक्तित्व घर और दफ्तर में विभाजित होता है। घर का कामकाज देखने के बाद उसे समय पर दफ्तर जाने की समस्या का सामना करना पड़ता है। ऐसे वक्त पति उसकी मदद करने की अपेक्षा उस पर अत्याचार करता है। उसे पीटता है। पति की व्यसनाधीनता के कारण परिवार की पूरी जिम्मेदारी नारी को संभालनी पड़ती है। घर का कामकाज देखने के बाद उसे मेहनत -मजदूरी करके परिवार के खाने का बंदोबस्त करना पड़ता है।

नारी के सामने सास व ननद के रूप में नारी ही समस्या बनकर खड़ी होती है। सास, ननद को घर की बहु पर अत्याचार करना तथा उसे पीड़ित प्रताड़ित करना, उसके पति से पीटवाने में आनंद मिलता है।वे अवसर मिलते ही बहु को पीटवाने के लिए तत्पर रहती हैं। कभी-कभी नारी को परिवार के पुरूषों में ही विभक्त होकर वेश्या जैसा कर्म करना पड़ता है। तथा असहाय होकर उसे इस अत्याचार को सहना पड़ता है। इसी तरह पति के अवैध संबंध भी नारी को आहत करते हैं। पति की रखैल के कारण भी नारी की पति द्वारा पीटाई होती है। नारी सौंदर्य के कारण भी पति के शक का शिकार होती है। नारी की बदसूरती के कारण विवाह नहीं होते। विवाह न होने के पीछे आर्थिक विपन्नता की समस्या भी होती है। नारी के सामने उपस्थित होनेवाली इन तमाम समस्याओं के संकेत विवेच्य कहानियों में मिलते हैं।

वास्तविक रूप में जीवन काल में मनुष्य के सामने अनेक समस्याएँ प्रस्तुत होती हैं। उन समस्याओं को पुरूष अपना बल और सामाजिक स्थान के आधार पर सुलझाते हैं। नारी के सामने जो समस्याएँ उपस्थित होती हैं उन्हें नारी जितनी भी सुलझाने की कोशिश करे उतनी ही उलझ जाती है। ऐसी समस्याओं को सुलझाते-सुलझाते नारी खुद एक समस्या बनकर रह गई है। पुरुषों ने अपना अधिकार जमाने के लिए नारी को एक कठपुतली की तरह अपनी उंगलियों पर नचाया है और आज भी नचा रहा है।

## : संदर्भ सूची :


1. सं. नगेंद्रनाथ वसु - हिंदी विश्वकोश भाग -23, पृ. 508
2. सं. डॉ. श्यामसुदंरदास-`हिंदी शब्दसागर भाग-10, पृ. 4967
3. सं. रामचंद्र वर्मा-मानक हिंदी कोश भाग-5, पृ. 283
4. सं. श्री. नवलजी-नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. 1407
5. डॉ. रामशंकर शुक्ल`रसाल`-भाषा-शब्द-कोश, पृ. 1522
6. प्रा. सौ. सुमन पाटे-भारतीय सामाजिक समस्या, पृ. 134
7. धर्मपाल-नारी एक विवेचन, पृ. 8
8. वहीं, पृ. 11
9. डॉ. सुधा कालदाते-भारतीय सामाजिक समस्या, पृ. 107
10. चंद्रश्वेर प्रसाद सिंह-वर-वधू, पृ. 91
11. राम आहूजा - सामाजिक समस्याएँ, पृ. 1
12. हरमन चौहान -`छाग`, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-तीन, पृ. 86 ( वर्ष :22, अंक 317)
13. वहीं, पृ. 86
14. अरिगपूडि - `उलझे संबंध`, `सारिका` नारी यातना -कथा विशेषांक- एक, पृ. 23 (वर्ष :22, अंक : 322)
15. जगवीर सिंह वर्मा - `आधी उम्र की पूरी औरत`, `सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक -एक, ( वर्ष : 22, अंक 322) पृ. 92/93
16. यशपाल- `फूलो का कुरता`,`सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक -दो, पृ. 26 (वर्ष : 21, अंक : 289)
17. बूटा सिंह - तीन सतियाँ, `सारिका`, नारी यातना- कथा विशेषांक -एक, पृ. 68 (वर्ष : 22, अंक : 322)

18. नासिरा शर्मा- `दस्तक`,`सारिका` नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 25

(वर्ष: 22, अंक 323)

19. यशपाल - `धर्मरक्षा`, `सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक -एक, पृ. 17

(वर्ष : 21, अंक : 288)

20. राम आहूजा - सामाजिक समस्याएँ, पृ. 231

21. सत्येंद्र शर्मा - `शट अप सर !`, `सारिका`, देह -व्यापार-कथा विशेषांक- दो पृ. 63/65

( वर्ष : 22, अंक: 316)

22. रमेश आनंद - नियंत्रण ,`सारिका`, नारी यातना- कथा विशेषांक- दो, पृ. 78

(वर्ष :22, अंक : 323)

23. वही, पृ. 78

24. क्वीनी ठाकूर - जानकी, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो , पृ. 57

(वर्ष : 22, अंक : 323)

25. वहीं, पृ. 59

26. सुमन पाटे - भारतीय सामाजिक व्यवस्था, पृ. 141

27. जगवीर सिंह वर्मा - आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 93

(वर्ष : 22, अंक 322)

28. नासिरा शर्मा- `दस्तक`, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 26

(वर्ष : 22, अंक 323)

29. सुमन पाटे - भारतीय सामाजिक समस्या, पृ. 143

30. जगवीर सिंह वर्मा - आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 91

(वर्ष : 22, अंक 322)

31. वहीं, पृ. 92

32. वहीं, पृ. 93

33. हमीद जबी - गुनहगार, `सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक-दो, पृ. 38

(वर्ष : 21, अंक : 289)

34. इस्मत चुगताई - लिहाफ, `सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक-दो, पृ. 43

(वर्ष 21, अंक : 289)

35. राम आहूजा - सामाजिक समस्याएँ, पृ. 233

36. जगवीर सिंह वर्मा - आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 90

(वर्ष : 22, अंक 322)

37. सरिता राय - उपन्यासकार प्रेमचंद की सामाजिक चिंता, पृ. 137

38. जगवीर सिंह वर्मा - आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 90

(वर्ष : 22, अंक 322)

39. वहीं, पृ. 91

40. आरिगपूडि - `उलझे संबंध, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 23

(वर्ष : 22, अंक : 322)

41. वहीं, पृ. 22

42. सुधा कालदाते -भारतीय सामाजिक समस्या, पृ. 119

43. बीर राजा - भोली, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 32

(वर्ष : 22, अंक 322)

44. वहीं, पृ. 31

45. वहीं, पृ. 31

46. रेणु गुप्ता - हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, पृ. 54

47. कर्तारसिंह दुग्गल - करवा चौथ, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 15

(वर्ष :22, अंक-322)

48. वहीं, पृ. 14

49. वहीं, पृ. 15

50. राम आहूजा - सामाजिक समस्याएँ, पृ. 232

51. आरिगपूडि - `उलझे संबंध`, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 23

(वर्ष : 22, अंक : 322)

52. रामदरश मिश्र-हद से हद तक, `सारिका`, नारी यातना -कथा विशेषांक-दो, पृ. 29

(वर्ष : 22, अंक 323)

53. कमलेश भारतीय - एक सूरज मुखी की अधूरी परिक्रमा, `सारिका`,

नारी यातना कथा विशेषांक-दो (वर्ष : 22, अंक : 323) पृ. 49

54. वहीं, पृ. 50

55. वहीं, पृ. 50

56. बूटा सिंह - तीन सतियाँ, `सारिका`, नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 66

(वर्ष : 22, अंक 322)

57.वहीं, पृ. 67

58. मधू किश्वर- बीस या पच्चीस, `सारिका`, नारी यातना -कथा विशेषांक-एक, पृ. 84

(वर्ष : 22, अंक: 322)

59. श्याम निर्मम - सांप सीढ़ी, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 58

(वर्ष :22, अंक: 322)

60. बूटा सिंह - तीन सतियाँ, पृ. 67

61. वहीं, पृ. 67

62. सत्यपाल सक्सेना - अंधेरे के विरूद्ध, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 64

(वर्ष :22, अंक : 323)

63. सत्यपाल सक्सेना - अंधेरे के विरूद्ध, `सारिका`, नारी यातना-कथा-विशेषांक-दो, पृ. 64

(वर्ष: 22, अंक : 323)

64. वही, पृ. 65

65. बूटा सिंह - तीन सतियाँ , `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 68

(वर्ष :22, अंक : 323)

66. वहीं, पृ. 67

67. रिचर्ड द. अंब्रेसियो- बेकसी के आगे, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक-चार, पृ. 71

(वर्ष :23, अंक : 340)

68. वहीं, पृ. 73

69. बूटा सिंह - तीन सतियाँ, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 66

(वर्ष :22, अंक : 322)

70. विजय किशोर मानव - प्रलय, `पाक्षिक सारिका `, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 81

(वर्ष :22, अंक : 323)

71. नफीस आफरीदी - दौड़, `सारिका `, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 46

(वर्ष :22, अंक : 323)

72. मधु किश्वर - बीस या पच्चीस, `सारिका `, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 84

(वर्ष :22, अंक : 322)

78. वहीं, पृ. 84

79. यशपाल - फूलो का कुर्ता, `सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक-दो, पृ. 26

(वर्ष : 21, अंक 289)

75. रामदरश मिश्र - हद से हद तक, `सारिका`, नारी यातना कथा विशेषांक- दो , पृ. 82

(वर्ष :22, अंक : 323)

76. अरिगपूडि - उलझे संबंध, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-तीन, पृ. 22

(वर्ष :22, अंक : 322)

77. इस्मत चुगताई - लिहाफ, `सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक-दो, पृ. 43

(वर्ष : 21, अंक : 289)

78. राम आहूजा - सामाजिक समस्याएँ, पृ. 1

79. हरमन चौहान - `छाग`, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा-विशेषांक-तीन पृ. 87

(वर्ष : 22, अंक : 317)

80. जगवीर सिंह वर्मा - आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-एक, पृ. 90

(वर्ष :22, अंक : 322)

81. रामदरश मिश्र -हद से हद तक, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक-दो, पृ. 32

(वर्ष : 22, अंक 323)

82. नफीस आफरीदी - दौड , `सारिका`, नारी यातना- कथा विशेषांक -दो , पृ. 44

(वर्ष : 22, अंक : 323)

83. सआदत हसन मंटो - धुंआ, `सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक-दो, पृ. 36

(वर्ष : 21, अंक : 289)

84. आगिपूडि - उलझे संबंध, `सारिका`, नारी यातना-कथा विशेषांक- एक, पृ. 23

(वर्ष : 22, अंक : 322)

85. हमीद जर्वी - गुनाहगार, `सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक-दो, पृ. 38

(वर्ष :21, अंक : 289)

86. जगवीर सिंह वर्मा : आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका`, नारी यातना कथा विशेषांक-एक, पृ. 90

(वर्ष :22, अंक : 322)

****